

अप्रैल - सितंबर 2025

H4-Waves

है-वेव्स

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड - हैदराबाद की गृह पत्रिका



दिनांक 29.05.2025 को नराकास के वार्षिक कार्यक्रम में बीईएल, हैदराबाद को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य हेतु **राजभाषा ट्रॉफी से सम्मानित** किया गया।

विषय-वस्तु

महाप्रबंधक एवं यूनिट प्रमुख का संदेश	3
संपादकीय	4
दौरे	5
विशेष कार्यक्रम	8
पर्यावरण पहल	12
कारपोरेट सामाजिक दायित्व	13
राजभाषा गतिविधियां	14
तकनीकी लेख	17
राजभाषा लेख	21
बच्चों के लेख	30
उपलब्धियां	32
पदोन्नतियां	33
सेवानिवृत्तियां	34
विविध	39

महाप्रबंधक और यूनिट प्रमुख का संदेश



प्रिय साथियों,

वर्ष 2024-25 के लिए ईडब्ल्यूएनएस और ईडब्ल्यूएलएस एसबीयू के योगदान से हमारी यूनिट द्वारा रु. 2,328.5 करोड़ का प्रत्यक्ष बिक्री टर्नओवर हासिल करने के साथ वर्ष की सकारात्मक शुरुआत हुई है। बीईएल हैदराबाद ने पहली बार रु. 2000 करोड़ के बिक्री टर्नओवर को पार किया है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि आपकी कड़ी मेहनत, प्रतिबद्धता और उत्कृष्टता को दर्शाती है। इस प्रकार एक और वर्ष के लिए विशिष्ट उपलब्धियों, अटूट समर्पण और असाधारण प्रदर्शन हेतु मैं आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

पहली बार 1500 करोड़ रुपये के प्रभावशाली मील के पथर को पार करने के लिए ईडब्ल्यूएनएस एसबीयू की उपलब्धि विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसके उन्नत योजना और अभिनव कार्यान्वयन के माध्यम से यह संभव हो पाया है। यह उनके लिए निर्देशित आरओपी लक्ष्य से 23% अधिक है। इस उपलब्धि ने ईडब्ल्यूएनएस को अन्य एसबीयू की श्रेणी में लगातार तीसरे वर्ष शीर्ष स्थान पर स्थापित किया है जो हम सब के लिए गर्व की बात है।

इस वर्ष हमारी उत्कृष्ट उपलब्धियों में 3 पेटेंट प्राप्त करना (यूनिट के लिए कुल 7 पेटेंट), ईडब्ल्यूएनएस का लगातार दूसरे वर्ष सभी एसबीयू में स्वर्ण पुरस्कार से सम्मानित किया जाना, लागत में कमी के लिए विशेष पुरस्कार, हमारे कर्मचारियों के लिए अनुसंधान एवं विकास तथा उत्कृष्टता पुरस्कार, एवं वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्टता के लिए नराकास राजभाषा ट्रॉफी से सम्मानित किया जाना शामिल है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए अपनी प्रतिबद्धता को स्थापित करते हुए, बीईएल हैदराबाद यूनिट को टीएसएसपीडीएल से 100% हरित ऊर्जा

उपयोग प्रमाण-पत्र मिला। इसके अलावा, एक पेड माँ के नाम के तहत, नाचारम और इब्राहिमपट्टनम संयंत्रों में कई पौधे लगाए गए।

कारपोरेट सामाजिक दायित्व के अंतर्गत इस वर्ष मोबाइल साइंस लैब और कयान स्मार्ट क्लासरूम प्रणाली का वितरण सहित शिक्षा के क्षेत्र में कुछ प्रभावशाली कार्य किए गए हैं। चिकित्सा में सुधार के लिए गांधी अस्पताल और चिकित्सा महाविद्यालय, हैदराबाद में प्लास्टिक सर्जरी विभाग के लिए आवश्यक उपकरण वितरित किए गए हैं।

मुझे यह भी बताते हुए खुशी हो रही है कि ईडब्ल्यूएलएस-इब्राहिमपट्टनम एसबीयू की स्थापना का कार्य पूरा होने वाला है और इसके जल्द ही शुरू होने की संभावना है। आरएफ सुपर कंपोनेंट मैनुफैक्चरिंग सुविधा का निर्माण अंतिम चरण में है और मई 2025 में इसके शुरू होने की संभावना है।

उल्लिखित असाधारण सफलता ईडब्ल्यूएनएस और ईडब्ल्यूएलएस के सभी प्रभागों और विभागों के अमूल्य समर्थन और योगदान का प्रत्यक्ष परिणाम है। इनमें नौसेना, थलसेना और वायुसेना परियोजनाओं के पीएमजी समूह, प्रचालन (क्रय, संयोजन, उप-ठेका, भंडार और सूचना प्रणाली, आरएफएससी विनिर्माण और आरएफ लैब, गुणवत्ता प्रबंधन, विपणन, वित्त, एमएस, सतर्कता, इंजीनियरिंग सेवाएं, मानव संसाधन, परियोजना और प्रशिक्षु अभियंता, प्रशिक्षु, संविदा कार्यबल और ईडब्ल्यूएनएस और ईडब्ल्यूएलएस की आउटसोर्सिंग एजेंसियों के समर्पित सहयोगी स्टाफ शामिल हैं। यूनिट के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा दिखाया गया अटल समर्पण और प्रतिबद्धता इस ऐतिहासिक सफलता को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण रही है।



यह उल्लेखनीय उपलब्धि परियोजना प्रमुखों और उनकी टीमों के सामूहिक और सहयोगात्मक प्रयासों के साथ-साथ विभिन्न प्रभागों, बीईएल एसबीयू, ग्राहक यूनिटों और डीएलआरएल, पीएमओ सूरज, सीक्यूई (एन), एनटीजी (एच), डीजीक्यूए, एसक्यूएल, एमएजी 5, एएफएलसी, आरसीएमए, सीआरआई और नौसेना, थलसेना, वायु सेना, राज्य पुलिस और अन्य अर्धसैनिक बलों की अन्य निरीक्षण एजेंसियों सहित प्रमुख साझेदारों के अमूल्य सहयोग से संभव हुई।

हम अपने कर्मचारियों के परिवारों के प्रति भी उनके अटल समर्पण के लिए अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते हैं। उनका प्रोत्साहन और समर्थन इन उल्लेखनीय उपलब्धियों को सक्षम बनाने में सहायक रहा है।

भविष्य के लिए, हमारे पास अत्यधिक विकास क्षमता के साथ 9,000 करोड़ रुपये (ईडब्ल्यूएनएस और ईडब्ल्यूएलएस सहित) से अधिक की एक सुदृढ़ ऑर्डर बुक है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि आने वाले वर्षों में, बीईएल-हैदराबाद अपने कर्मचारियों और कार्यपालकों की विशेषज्ञता, समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ नए मील के पत्थर हासिल करेगा। प्रशिक्षु और परियोजना अभियंता सहित सभी हितधारकों के अटूट समर्थन के साथ, विस्तारित कार्यबल और ठेका कार्मिकों के साथ, संगठन और भी अधिक सफलता के लिए तैयार है।

श्री के श्रीनिवास
यूनिट प्रमुख और महाप्रबंधक
(ईडब्ल्यूएनएस)

डॉ. सीएच विश्वनादम
महाप्रबंधक
(ईडब्ल्यूएलएस)

संपादकीय

प्रिय साथियों,

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, हैदराबाद यूनिट की गृह पत्रिका है-वेज का अगला अंक प्रकाशित करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। है-वेज केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि बीईएल, हैदराबाद यूनिट के प्रति कर्मचारियों की निष्ठा एवं यूनिट की गतिविधियां उनके साथ साझा करने के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता का एक जीवंत उदाहरण है।

महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख तथा महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएलएस) का वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान यूनिट द्वारा प्राप्त विक्रयावर्त एवं अनेक मुख्य उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी देते हुए कर्मचारियों के लिए उद्देशित संदेश में निहित सकारात्मक एवं दूरदर्शी दृष्टि एवं ध्येय इस अंक का संकल्प ज्योति है। इस दौरान यूनिट में रियर एडमिरल सी रघुराम, ए.सी.ओ.एम.(एनएसएम), कमोडोर अनुराग श्रीवास्तव, कमोडोर (एसएमएक्यू), एन श्रीनिवास राव, विशिष्ट वैज्ञानिक, निदेशक (डीएलआरएल) और मेजर जनरल के. के. चक्रवर्ती, सीएसओ दक्षिणी कमान जैसे विशिष्ट अतिथियों का आगमन और दौरे से संबंधित विवरण इस अंक में उल्लिखित है। इसके अलावा स्वतंत्रता दिवस, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, हिंदी दिवस का भव्य आयोजन जैसे यूनिट की अनेक महत्वपूर्ण गतिविधियों की विशेषताएं इस अंक में शामिल की गई हैं। इनमें कर्मचारियों और उनके बच्चों की सक्रिय प्रतिभागिता ने इन कार्यक्रमों को सफल और यादगार बनाया है।

इस अंक में कृत्रिम प्रज्ञान, हिंदी भाषा एवं राजभाषा में कामकाज से संबंधित विषय-वस्तु पर कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत लेख भी शामिल किए गए हैं।



हमें पूरा विश्वास है कि इस प्रकार यूनिट की गतिविधियों, तकनीकी एवं रोचक लेख, यूनिट, कर्मचारी एवं उनके बच्चों से संबंधित विशेष उपलब्धियों के विवरण से सम्मिलित एवं सुसज्जित इस गृह पत्रिका को आप सहर्ष तथा गर्व के साथ स्वीकार करेंगे।

मैं इस अवसर पर है-वेज के संपादक मंडल की ओर से यूनिट के सभी लेखदाताओं की सराहना करता हूँ और धन्यावाद व्यक्त करता हूँ। हमारी हमारे गृह पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए है-वेज अपने पाठकों से प्रविष्टियां, बहुमूल्य प्रतिक्रिया और सुझाव आमंत्रित करता है।

शुभकामनाओं के साथ

एवीवी शिवनारायण
संपादक

दौरे...

रियर एडमिरल सी. रघुराम ए. सी. ओ. एम. (एनएसएम)



श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख, विशिष्ट अतिथि रियर एडमिरल सी. रघुराम, ए. सी. ओ. एम. (एनएसएम) का स्वागत करते हुए।



रियर एडमिरल सी. रघुराम, ए. सी. ओ. एम. (एनएसएम), यूनिट से श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख एवं अन्य अधिकारियों के साथ चर्चा करते हुए।



श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख विशिष्ट अतिथियों को उत्पादों के बारे में बताते हुए।



श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख, रियर एडमिरल सी. रघुराम, ए. सी. ओ. एम. (एनएसएम) को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।

विश्व स्तर पर स्थान: हिंदी दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। यह वैश्विक स्तर पर तीसरे या चौथे स्थान पर आती है।

संस्कृत से संबंध: हिंदी की जड़ें प्राचीन संस्कृत भाषा में हैं और यह उसी की प्रत्यक्ष वंशज मानी जाती है।

मेजर जनरल के. के. चक्रवर्ती सीएसओ दक्षिणी कमान



डॉ. सीएच विश्वनादम, महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएलएस), मेजर जनरल के. के. चक्रवर्ती, सीएसओ दक्षिणी कमान को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।

श्री रजनीश शर्मा, निदेशक (बै.कॉ.)



बीईएल हैदराबाद के महाप्रबंधक व यूनिट प्रमुख (ईडब्ल्यूएलएस) श्री के श्रीनिवास और महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएलएस) डॉ. सीएच विश्वनादम, श्री रजनीश शर्मा, निदेशक (बै.कॉ.) का स्वागत करते हुए।

श्री रजनीश शर्मा, निदेशक (बै.कॉ.) बीईएल हैदराबाद का दौरा करते हुए।

कमोडोर संदीप कुमार पीडीएनएस



श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएलएस) व यूनिट प्रमुख, विशिष्ट अतिथि कमोडोर संदीप कुमार (पीडीएनएस) का स्वागत करते हुए।

श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएलएस) व यूनिट प्रमुख, विशिष्ट अतिथि कमोडोर वी के दहिया (ओआईसी, ईडब्ल्यूओएससी) का स्वागत करते हुए।

कमोडोर संदीप कुमार (पीडीएनएस) और कमोडोर वीके दहिया (ओआईसी, ईडब्ल्यूओएससी) ने 12 अगस्त 2025 को बीईएल, हैदराबाद का दौरा किया।



कमोडोर संदीप कुमार (पीडीएनएस) और महाप्रबंधक श्री के श्रीनिवास बीईएल, हैदराबाद चर्चा करते हुए।

कमोडोर संदीप कुमार (पीडीएनएस), यूनिट श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएलएस) व यूनिट प्रमुख एवं अन्य अधिकारियों के साथ चर्चा करते हुए।

दिनांक 12 अगस्त 2025 को कमोडोर वीके दहिया (ओआईसी, ईडब्ल्यूओएससी) ने बीईएल, हैदराबाद में बैठक में चर्चा करते हुए।



कमोडोर संदीप कुमार (पीडीएनएस) को महाप्रबंधक श्री के श्रीनिवास फैक्टरी भ्रमण कराते हुए।

श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएलएस) व यूनिट प्रमुख कमोडोर संदीप कुमार (पीडीएनएस) को उत्पादनों का विवरण देते हुए।



विशेष कार्यक्रम...

स्वतंत्रता दिवस समारोह

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख ध्वजारोहण करते हुए।



79 वाँ स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ग्रुप फोटो।

रक्त दान शिविर



रक्त दान शिविर में कर्मचारियों द्वारा प्रतिभागिता।



श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख एवं एसबीआई प्रबंधन द्वारा रक्त दान प्रतिभागियों को भेंट देकर सम्मानित करते हुए।



रक्त दान शिविर में महिला कर्मचारियों की सक्रिय प्रतिभागिता।



रक्त दान शिविर में प्रतिभागी प्रमाण पत्र के साथ।

वैश्विक उपस्थिति: भारत के अलावा, हिंदी नेपाल, फिजी, मॉरीशस, गयाना और सूरीनाम जैसे देशों में भी बड़े पैमाने पर बोली जाती है।

यद्यपि कई देशों में बड़ी संख्या में हिंदी बोलने वाले लोग रहते हैं, लेकिन **फिजी** एकमात्र ऐसा देश है जहाँ हिंदी (विशेष रूप से **फिजी हिंदी**) को संविधान द्वारा **आधिकारिक भाषा** के रूप में मान्यता प्राप्त है।

अग्निशमन पूर्वाभ्यास



दिनांक 25.07.2025 को यूनिट में अग्नि सुरक्षा मॉक ड्रिल के दौरान कर्मचारी विशेष प्रशिक्षण ग्रहण करते हुए।



दिनांक 25.07.2025 को यूनिट में अग्नि सुरक्षा मॉक ड्रिल के दौरान कर्मचारी विशेष प्रशिक्षण ग्रहण करते हुए।



दिनांक 25.07.2025 को बीईएल, हैदराबाद में अग्नि सुरक्षा मॉक ड्रिल में कर्मचारी प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस



महाप्रबंधक (ईडबल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख श्री के श्रीनिवास (ईडबल्यूएनएस) और महाप्रबंधक डॉ सीएच विश्वनादम (ईडबल्यूएलएस) दिनांक 21.06.2025 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के दौरान कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर महाप्रबंधक एवं यूनिट प्रमुख सहित सभी कर्मचारी योग शिविर में सक्रिय प्रतिभागिता करते हुए।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर महाप्रबंधक एवं यूनिट प्रमुख सहित सभी कर्मचारी योग शिविर में सक्रिय प्रतिभागिता करते हुए।



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर महाप्रबंधक एवं यूनिट प्रमुख सहित सभी कर्मचारी योग शिविर में सक्रिय प्रतिभागिता करते हुए।

पर्यावरण पहल - स्वच्छता अभियान

स्वच्छता कार्यक्रम में अधिकारी एवं कर्मचारियों की सक्रिय प्रतिभागिता।



हिंदी शब्द-सिंधु भारत सरकार के राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा विकसित एक विशाल और आधुनिक ऑनलाइन शब्दकोश है। इसे हिंदी भाषा के शब्दों का एक “महासागर” माना जा सकता है।

मुख्य बातें

- **विशाल संग्रह:** इस पोर्टल पर 7 लाख से भी अधिक शब्द उपलब्ध हैं। यह हिंदी के सबसे बड़े डिजिटल शब्दकोशों में से एक है।
- **विविधता:** इसमें केवल सामान्य बोलचाल के शब्द ही नहीं, बल्कि पर्यायवाची, विलोम, मुहावरे, लोकोक्तियाँ और आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से जुड़े पारिभाषिक शब्द भी शामिल हैं।
- **उद्देश्य:** इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा के मानकीकरण को बढ़ावा देना और सरकारी कामकाज के साथ-साथ आम जनता के लिए हिंदी शब्दों के सही अर्थ और प्रयोग को सुलभ बनाना है।
- **विशेष श्रेणियाँ:** हाल ही में इसमें ‘मेडिकल शब्द सिंधु’ जैसी विशेष श्रेणियाँ भी जोड़ी गई हैं, ताकि चिकित्सा और अन्य तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग आसान हो सके।
- **पहुँच:** यह पूरी तरह से डिजिटल है और इसे राजभाषा विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

कारपोरेट सामाजिक दायित्व



श्री एन विक्रमन, निदेशक, मा.सं. बीईएल एवं श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक, बीईएल, हैदराबाद



कयान स्मार्ट क्लासरूम प्रणाली में छात्राएँ दौरा करतें हुए।



गांधी अस्पताल और चिकित्सा महाविद्यालय, हैदराबाद में प्लास्टिक सर्जरी विभाग के लिए आवश्यक उपकरण वितरित करते हुए।



गांधी अस्पताल और चिकित्सा महाविद्यालय, हैदराबाद में प्लास्टिक सर्जरी विभाग के लिए आवश्यक उपकरण वितरित करते हुए।

देवनागरी लिपि: हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। यह एक ध्वन्यात्मक (phonetic) लिपि है, जिसका अर्थ है कि इसे जैसा लिखा जाता है, वैसा ही बोला जाता है।

वाक्य संरचना: हिंदी की वाक्य संरचना कर्ता-कर्म-क्रिया होती है। उदाहरण के लिए: “मैं आम खाता हूँ”।

राजभाषा गतिविधियां...

बीईएल हैदराबाद यूनिट की राजभाषा गतिविधियों की विशेषताएँ (अप्रैल से सितंबर 2025)

अप्रैल से सितंबर 2025-26 की अर्ध वर्ष के दौरान दो कार्यशालाओं का आयोजन दिनांक 24.05.2025 और 23.08.2025 को किया गया। इन कार्यशालाओं में लगभग 114 कर्मचारी उपस्थित हुए।

हिंदी दिवस समारोह

हिंदी दिवस के अवसर पर दि.15.09.2025 को कार्यक्षेत्र में मेसर्स एआईजी अस्पताल के वरिष्ठ डॉक्टरों द्वारा हृदयरोग एवं न्यूरोलॉजी विषय पर एक विशेष अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अतिथि व्याख्यान में 120 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस दौरान अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं माननीय गृह मंत्री जी के संदेश का वाचन किया गया।



दिनांक 24.05.2025 को आयोजित पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला



हिंदी दिवस के अवसर पर 15.09.2025 का मेसर्स एआईजी अस्पताल के वरिष्ठ हृदय एवं न्यूरोलॉजी डॉक्टर को महाप्रबंधक श्री के श्रीनिवास (ईडबल्यूएनएस) द्वारा किताब भेंट दिया गया।



दिनांक 23.08.2025 को आयोजित पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला

भारत में हिंदी प्रिंट मीडिया का दुनिया में सबसे बड़ा और प्रतिस्पर्धी बाजार है।

श्रेणी	अनुमानित संख्या	प्रमुख उदाहरण
दैनिक समाचार पत्र	15,000 से अधिक	दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स, राजस्थान पत्रिका
साप्ताहिक पत्रिकाएं	12,000 से अधिक	इंडिया टुडे (हिंदी), पांचजन्य, साप्ताहिक हिंदुस्तान
पाक्षिक पत्रिकाएं	4,500 से अधिक	चंपक, सरिता, गृहलक्ष्मी
मासिक पत्रिकाएं	9,000 से अधिक	प्रतियोगिता दर्पण, मेरी सहेली, कादम्बिनी
अन्य पत्रिकाएं	5,000 से अधिक	त्रैमासिक और वार्षिक (साहित्यिक या शैक्षणिक)

डिजिटल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण भारत के बाहर “दैनिक” प्रिंट समाचार

पत्र कम हैं, लेकिन कई देशों में साप्ताहिक या मासिक सामुदायिक पत्रिकाएं अभी भी सक्रिय हैं।

देश	प्रकाशन का प्रकार	उल्लेखनीय उदाहरण
फिजी	साप्ताहिक / दैनिक	शांति दूत (भारत के बाहर सबसे पुराने हिंदी साप्ताहिकों में से एक)
मॉरीशस	साप्ताहिक / मासिक	आर्योदय, और विभिन्न सरकारी सांस्कृतिक पत्रिकाएं।
नेपाल	दैनिक / साप्ताहिक	हिमालिनी (मासिक) और तराई क्षेत्र के स्थानीय दैनिक।
अमेरिका / ब्रिटेन	मासिक / डिजिटल	विश्व विवेक अमेरिका, भारत-दर्शन (न्यूजीलैंड/ग्लोबल)।
यूएई / खाड़ी देश	साप्ताहिक / विशेष संस्करण	प्रवासी समुदायों के लिए विशेष पत्रिकाएं।

हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह

बी.ई.एल-हैदराबाद में सितंबर 2025 को हिंदी माह के रूप में मनाया गया और इस दौरान निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विवरण इस प्रकार है –

शीर्षक	प्रतिभागिता	पुरस्कार	विजेता
वाक्	07	04	07
हिंदी टंकन	28	04	04
हस्त लेख	25	04	04
हस्त लेख (पीई/टीई के लिए)	21	04	04
हस्त लेख (शिक्षुओं के लिए)	15	04	04
निबंध लेख	11	04	04
निबंध लेखन (पीई/टीई के लिए)	09	04	04
निबंध लेखन (शिक्षुओं के लिए)	09	04	09
टिप्पण और आलेखन (वरिष्ठ कार्यपालक)/ऑनलाइन	30	04	06
टिप्पण और आलेखन (कार्यपालक)/ऑनलाइन	35	04	07
टिप्पण और आलेखन (गैर-कार्यपालक)/ऑनलाइन	04	04	04
अंश्याक्षरी	35	04	13
पोस्टर प्रतियोगिता (कर्मचारी के शिक्षुओं के लिए)	9	4	9
निबंध लेखन (कर्मचारी के शिक्षुओं के लिए)	9	4	9
कुल	247	56	88

हिंदी माह समापन कार्यक्रम – दि.29.09.2025 को मुख्य अतिथि कप्तान डी.आर. प्रसाद, प्रभारी अधिकारी, एनटीजी, हैदराबाद, श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडबल्यूएनएस) एवं यूनिट प्रमुख के समक्ष हिन्दी माह समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 120 कर्मचारियों ने भाग लिया।

राजभाषा अधिकारी ने राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियों से कर्मचारियों को अवगत कराया और हिंदी माह कार्यक्रमों का ब्योरा दिया। कर्मचारियों को संबोधित करते हुए यूनिट प्रमुख ने राजभाषा कार्यान्वयन प्रयासों की सराहना की और पुरस्कार ग्रहीताओं को बधाई दी। इसी उत्साह के साथ वे



श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडबल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख, हिंदी माह के दौरान मुख्य अतिथि कप्तान डी.आर. प्रसाद, प्रभारी अधिकारी, एनटीजी, हैदराबाद को स्मृति चिन्ह भेंट देते हुए।



हिंदी माह समारोह 2025 – मुख्य अतिथि कप्तान डी.आर. प्रसाद, प्रभारी अधिकारी, एनटीजी, हैदराबाद एवं श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडबल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख पुरस्कार विजेताओं के साथ

साल-भर के लिए भी हिंदी काम-काज में अपना योगदान बनाए रखने के लिए उन्होंने सभी को प्रोत्साहित किया। मुख्य अतिथि ने हिंदी कार्यक्रमों के प्रतिभागियों को हार्दिक अभिनंदन प्रकट किया। मुख्य अतिथि एवं महाप्रबंधक (ईडबल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख द्वारा हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता एवं पुरस्कार/प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत चयन किए गए कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। अपर महाप्रबंधक (गुणवत्ता) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।

हिंदुस्तानी: बोलचाल के स्तर पर हिंदी और उर्दू काफी समान हैं। जब इन दोनों को मिलाकर बोला जाता है, तो इसे अक्सर ‘हिंदुस्तानी’ कहा जाता है।

आधिकारिक स्थिति: भारत के संविधान के अनुसार, हिंदी भारत की राजभाषा है, न कि राष्ट्रभाषा।



राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन राजभाषा

अप्रैल से सितंबर 2025-26 की अर्ध वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक का आयोजन प्रथम तिमाही के लिए दिनांक 27.06.2025 और दूसरी तिमाही के लिए 29.09.2025 को महाप्रबंधक की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियों एवं हिंदी माह के कार्यक्रमों पर चर्चा एवं समीक्षा हेतु म.प्र. सम्मेलन कक्ष में किया गया और इसमें समिति के सभी सदस्य उपस्थित हुए।

हिन्दी पुरस्कार योजना एवं विशेष प्रोत्साहन योजना

कर्मचारियों द्वारा मूल रूप से हिंदी में काम के लिए निर्धारण समिति द्वारा संबंधित कार्यालय आदेश में दिए गए दिशा-निर्देशों के अनुसार मूल्यांकन के लिए 38 कर्मचारियों से आवेदन प्राप्त हुए। इनमें से अर्हता प्राप्त 04 को प्रेमचंद पुरस्कार, 34 को जयशंकर प्रसाद पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त, कर्मचारियों के शिशुओं को हिंदी विषय में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए देय पुरस्कार के अंतर्गत यूनिट में 03 कर्मचारियों के शिशुओं को मैथिलीशरण पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र हिन्दी माह समापन समारोह के दौरान वितरित किए गए।

विशेष उपलब्धि / उल्लेख

दिनांक 29.05.2025 को बीएचईएल (आर एंड डी) हैदराबाद कार्यालय में संपन्न नराकास (उ) हैदराबाद की 61वीं अर्ध वार्षिक बैठक में कार्यालय प्रमुख एवं यूनिट राजभाषा अधिकारी उपस्थित हुए। जिसमें बीईएल को राजभाषा ट्रॉफी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जुलाई 2025 से प्रारंभ करते हुए 25 कर्मचारियों के साथ यूनिट में श्री एस रवि चंद्रा राव, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय के समन्वय से पारंगत प्रशिक्षण सत्र चलाया जा रहा है।



बीईएल, हैदराबाद में पारंगत बैच 2025 के प्रशिक्षणार्थियों की ग्रुप फोटो

दिनांक 14 एवं 15 सितंबर के दौरान गांधीनगर, गुजरात में आयोजित पाँचवाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में यूनिट राजभाषा अधिकारी एवं परियोजना अधिकारी (राजभाषा) उपस्थित होकर यूनिट का प्रतिनिधित्व किए।

दिनांक 14.06.2025 को युवा कार्यपालकों के लिए यूनिट में कंप्यूटर पर हिंदी टूल्स के उपयोग पर हिंदी शिक्षण योजना से प्राध्यापक के संयोजन से एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 35 कार्यपालक उपस्थित हुए।



कंप्यूटर हिंदी टूल्स पर आयोजित विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम।

तकनीकी लेख...

इलेक्ट्रॉनिक युद्ध में कृत्रिम प्रज्ञान: लाभ, जोखिम और चुनौतियाँ



बजाय स्वयं तय कर सकता है कि क्या उसे जैम करना है या नहीं?

परंपरागत से एडॉप्टिव प्रणाली तक

एआई युद्ध प्रणालियों को “अनुकूलनशील” बनाता है। उदाहरण- एक ड्रोन जिसे पहले केवल निरीक्षण के लिए बनाया गया था, एआई से लैस होने पर जरूरत पड़ने पर निगरानी से हमला करने की भूमिका को भी बदल सकता है।

अकेली मशीन से नेटवर्क प्रणाली तक

एआई के ज़रिए सभी सैन्य प्रणालियाँ अब एक-दूसरे से जुड़ सकती हैं। जैसे, एक सैटेलाइट से मिलने वाली जानकारी तुरंत जमीन पर मौजूद टैंक

तक पहुँचे और एआई उसे विश्लेषित करके निर्णय लेने में मदद करे।

एआई के विशेष लाभ

तेज और सटीक निर्णय: युद्ध में समय सबसे बड़ा हथियार होता है। एआई क्षणों में डेटा का विश्लेषण करके निर्णय ले सकता है, जो किसी भी इंसान के लिए संभव नहीं है।

थ्रेट डिटेक्शन (खतरे की पहचान): एआई दुश्मन की चालों, संचार सिग्नलों और गतिविधियों को स्कैन करके खतरों की पहचान करता है और सामयिक कार्रवाई के लिए सक्रिय रहता है।

सिग्नल प्रोसेसिंग और वर्गीकरण: सैकड़ों प्रकार के रेडियो और रडार सिग्नलों में से एआई यह तय कर सकता है कि कौन सा सिग्नल खतरनाक है, कौन सा नकली है और किस पर ध्यान देना ज़रूरी है।

कम संसाधनों में अधिक परिणाम: एआई की मदद से संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है। यह तय करता है कि कब, कहाँ और कितनी ऊर्जा या बैटविड्थ लगाई जाए।

अनुकूलन और लचीलापन - अगर कोई एक प्रणाली फेल हो जाए या दुश्मन द्वारा बाधित कर दी जाए, तो एआई आधारित प्रणाली तुरंत दूसरा विकल्प चुन सकता है।

निर्णयों की निरंतरता: मानव निर्णय परिस्थिति, थकावट या भावनाओं से प्रभावित हो सकते हैं - लेकिन एआई का निर्णय हर बार स्थिर और सुसंगत रहता है। इससे एकीकृत रणनीति बनाए रखने में सहायता मिलती है।

आज की दुनिया तकनीकी क्रांति के युग में प्रवेश कर चुकी है। प्रत्येक क्षेत्र - चाहे वह शिक्षा हो, चिकित्सा हो या रक्षा, कृत्रिम प्रज्ञान (एआई) से प्रभावित हो रहा है। आमतौर पर रक्षा और युद्ध रणनीतियों में एआई ने एक नया आयाम जोड़ दिया है। ‘इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर’ एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ एआई की भूमिका दिन प्रतिदिन अहम होती जा रही है।

इलेक्ट्रॉनिक युद्ध का उद्देश्य दुश्मन की संचार प्रणाली को बाधित करना, उसकी गतिविधियों को भ्रमित करना और अपनी प्रणाली को सुरक्षित रखना होता है। इसमें रेडियो तरंगें, रडार, सिग्नल जैमिंग, और साइबर संचालन जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। अब जब एआई इन सभी प्रणालियों में एकीकृत हो रहा है, तो युद्ध की दिशा और प्रभाव दोनों बदल रहे हैं।

इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर पर एआई का प्रभाव

अतीत में युद्ध के दौरान जहाँ बंदूकें, तोपें और सैनिक आमने-सामने होते थे, वहीं वर्तमान आधुनिक युग के युद्ध में सूचना, डेटा और इलेक्ट्रॉनिक्स सबसे बड़े हथियार बन गए हैं। इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर का उद्देश्य होता है - दुश्मन के संचार, रडार, नैविगेशन और नियंत्रण प्रणाली को जैम करना, भटकाना या निष्क्रिय करना। अब जब इसमें एआई को जोड़ा गया है, तो इसकी प्रभावशीलता, गति और स्वायत्तता कई गुना बढ़ गई है।

पूर्व-निर्धारित से स्वायत्त निर्णय तक

पहले एक रडार या जैमर को पहले से तय की गई सीमाओं में ही काम करना होता था। अब एआई ऐसे प्रणाली को खुद स्थिति के अनुसार निर्णय लेने में सक्षम बना देता है। उदाहरण: यदि एक एआई-सक्षम जैमिंग प्रणाली को कोई नया अनदेखा सिग्नल मिले, तो वह पहले से तय किए गए नियमों के



रणनीतिक सोच में गहराई: एआई बड़े स्तर पर “वार गेमिंग” और “प्रेडिक्टिव एनालिसिस” कर सकता है, जिससे वह दुश्मन की भावी चालों का अनुमान लगाकर पहले से रणनीति बना सकता है।

जटिल प्रणालियों का प्रबंधन: एआई ऐसे प्रणाली को भी संभाल सकता है जो इंसान के लिए बहुत जटिल हों। जैसे 50 ड्रोन एक साथ उड़ रहे हैं और सब अलग-अलग दिशाओं में निगरानी कर रहे हैं - एआई इस नेटवर्क को सहजता से नियंत्रित कर सकता है।

परंतु... प्रत्येक तकनीक के साथ आता है जोखिम

एआई जितनी बड़ी शक्ति है, उतनी ही गंभीर ज़िम्मेदारी भी है। अगर इसका इस्तेमाल समझदारी से न किया जाए, तो यह अपनी ही प्रणाली के खिलाफ काम कर सकता है। इलेक्ट्रॉनिक युद्ध जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में, एआई के प्रयोग से निम्नलिखित गंभीर और बहुस्तरीय खतरे उत्पन्न हो सकते हैं:

गलत निर्णय

एआई यदि खतरे को गलत तरीके से पहचान ले तो गंभीर नुकसान हो सकता है। उदाहरण: अगर कोई नागरिक ड्रोन कैमरा या टेलीविजन सिग्नल को दुश्मन का संकेत मान लिया जाए, तो उस पर हमला हो सकता है।

यह समस्या विशेष रूप से “सिग्नल प्रोसेसिंग” में आती है जहाँ एआई को लगातार निर्णय लेना होता है - और एक छोटी सी चूक भी भारी पड़ सकती है। यह न केवल तकनीकी नुकसान करता है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन और कूटनीतिक विवाद भी पैदा कर सकता है।

एआई की निर्णय प्रक्रिया समझ में न आना

एआई के निर्णय कैसे लिए गए, यह इंसान को स्पष्ट रूप से पता नहीं चलता। यही “ब्लैक बॉक्स” समस्या है। जब कोई सैन्य ऑपरेटर अगर किसी खतरे के जवाब में कार्रवाई करता है, लेकिन उसे यह पता नहीं कि एआई ने उस खतरे की पहचान क्यों की, तो वह उस निर्णय पर भरोसा नहीं कर सकता। इससे दो बातें हो सकती हैं: या तो वह एआई को पूरी तरह नजरअंदाज़ कर देगा या बिना सोचे-समझे उस पर निर्भर हो जाएगा। दोनों ही स्थिति में सैनिक और सैन्य संगठन खतरे में आ सकते हैं।

गलत डेटा या ‘डेटा पॉइज़निंग’ का खतरा

एआई मॉडल को प्रशिक्षित करने के लिए बहुत सारा डेटा चाहिए होता है। यदि उस डेटा में जानबूझकर झूठ या गलत जानकारी मिलाई गई हो, तो उसे “Data Poisoning” कहा जाता है। दुश्मन अगर एआई को गुमराह करने वाला डेटा दे, तो वह गलत सिग्नल्स को असली मान सकता है। एआई “नकली शत्रु” की पहचान करके संसाधनों की बर्बादी कर सकता है, या “असली शत्रु” को नज़रअंदाज़ कर सकता है। यह सबसे चुपचाप होने वाला हमला है, जो बिना गोली चले बड़ी क्षति कर सकता है।

छिपे हुए पक्षपात

एआई के निर्णय उस डेटा पर आधारित होते हैं जिससे उसे प्रशिक्षित किया गया है। अगर वह डेटा पक्षपातपूर्ण है, तो एआई का व्यवहार भी पक्षपातपूर्ण होगा। उदाहरण: यदि एआई केवल पश्चिमी देशों के युद्ध डेटा पर प्रशिक्षित

हुआ है, तो वह एशियाई या मध्य-पूर्वी युद्ध परिदृश्य को गलत तरीके से समझ सकता है। इससे सांस्कृतिक और भौगोलिक गलतफहमियाँ बढ़ सकती हैं। इससे निष्पक्षता खत्म हो सकती है और रणनीतिक निर्णय गलत दिशा में जा सकते हैं।

एआई प्रणाली की तकनीकी विफलता या बाधा

एआई आधारित प्रणाली भी मशीनें हैं, वे भी तकनीकी गड़बड़ियों का शिकार हो सकते हैं। उदाहरण: किसी सैटेलाइट आधारित एआई प्रणाली को अगर GPS सिग्नल न मिले तो उसका निर्णय पूरी तरह बिगड़ सकता है।

या फिर, अगर एआई को ऑपरेट करने वाला सर्वर क्रैश हो जाए, तो पूरी प्रणाली ठप पड़ सकती है। युद्ध के दौरान ऐसी गड़बड़ियाँ पूरे मिशन को विफल कर सकती हैं।

उत्तरदायित्व का अस्पष्ट होना

अगर एआई के कारण किसी निर्दोष नागरिक की मृत्यु होती है, तो कौन जिम्मेदार होगा? प्रोग्रामर? सैन्य कमांडर? ऑपरेटर? या खुद एआई? एआई को तो कोर्ट में नहीं बुलाया जा सकता, न उसे सजा दी जा सकती है।

इससे “जवाबदेही” की अवधारणा संकट में पड़ सकती है और इससे कानूनी और नैतिक विवाद बढ़ेंगे।

दुश्मन द्वारा एआई का दुरुपयोग

एआई का ज्ञान सिर्फ अच्छे हाथों में ही नहीं जाएगा। आतंकवादी, साइबर अपराधी और गैर-राज्यीय ताकतें भी इसका दुरुपयोग कर सकती हैं। उदाहरण: अगर कोई हैकर एआई जैमिंग प्रणाली को हैक कर ले और उसे अपने फायदे के लिए चला दे। या फिर, खुद एआई हथियार बनाकर जनसमूह पर हमला किया जाए। यह खतरा केवल युद्ध तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि समाज, नागरिकों और राष्ट्रीय सुरक्षा तक फैल सकता है।

रणनीतिक खतरे और संभावनाएँ

एआई के कारण एक नई ‘हथियारों की दौड़’ शुरू हो सकती है। प्रत्येक देश अपने-अपने एआई युद्ध प्रणालियों को पहले और बेहतर बनाने की कोशिश करेगा। यह वैश्विक तनाव को बढ़ा सकता है। साथ ही, अगर कोई एआई प्रणाली गलती से हमला कर दे, तो देशों के बीच संबंध टूट सकते हैं।

वहीं दूसरी ओर, एआई सीमित संसाधनों में अधिकतम प्रभाव देने की क्षमता भी रखता है। युद्ध की रणनीतियाँ पहले से अधिक वैज्ञानिक और तार्किक बन सकती हैं। यदि सही तरह से लागू किया जाए तो यह तकनीक युद्ध को छोटा, सटीक और कम जान-माल हानि वाला बना सकती है।

समाधान और सुधार के उपाय

एआई आधारित इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली जितनी ताकतवर है, उतनी ही संवेदनशील भी है। अगर इसका सही उपयोग किया जाए तो यह एक रक्षक बन सकती है। लेकिन यदि सावधानी न बरती जाए, तो यही प्रणाली अनजाने में खतरा भी बन सकती है। इसीलिए, इसे लागू करने से पहले कुछ विशेष उपायों और सुधारों की ज़रूरत है। नीचे हर समाधान को विस्तार से समझाया गया है:

एआई का स्पष्टीकरण

एआई के निर्णय तभी उपयोगी हैं जब इंसान उन्हें समझ सके। यदि कोई एआई मॉडल किसी निर्णय पर पहुँचता है, तो यह जरूरी है कि उस निर्णय के पीछे का कारण भी स्पष्ट हो। जैसे अगर एआई कहता है कि “यह रडार सिग्नल खतरे का संकेत है”, तो हमें यह भी जानना चाहिए कि किन विशेषताओं के आधार पर उसने यह निष्कर्ष निकाला। इससे सैन्य अधिकारी ज्यादा भरोसे के साथ निर्णय ले सकते हैं और जरूरत पड़ने पर उस निर्णय को चुनौती भी दे सकते हैं। इसके लिए योग्य कृत्रिम प्रज्ञान तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है, जो एआई के ‘ब्लैक बॉक्स’ को ‘व्हाइट बॉक्स’ में बदलने का काम करती हैं।

डेटा की गुणवत्ता और विविधता सुनिश्चित करना

एआई को जितना अच्छा डेटा मिलेगा, वो उतना ही बेहतर और भरोसेमंद बनेगा। सैन्य क्षेत्र में डेटा गोपनीय होता है, लेकिन फिर भी प्रशिक्षण के लिए सुरक्षित और विविध डेटा की आवश्यकता होती है। इसका समाधान यह हो सकता है कि “सिंथेटिक डेटा” तैयार किया जाए – मतलब ऐसा डेटा जो वास्तविक जैसा हो, लेकिन किसी भी गोपनीयता का उल्लंघन न करें। इसके अलावा, ऐसे सिमुलेशन तैयार किए जाएँ जिनमें एआई को विभिन्न प्रकार की युद्ध स्थितियों का अनुभव कराया जा सके। इससे वो अनजाने खतरों का सामना करने में भी सक्षम हो सकेगा।

मानव की भूमिका को प्राथमिकता देना

एआई चाहे जितना भी तेज़ और सटीक हो, लेकिन आखिरी निर्णय की ज़िम्मेदारी इंसान की होनी चाहिए। युद्ध जैसे गंभीर मामलों में मानव की अंतर्ज्ञान शक्ति, अनुभव और नैतिक सोच एआई से कई अधिक महत्वपूर्ण होती है। इसलिए ‘ह्यूमन-इन-लूप’ व्यवस्था को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जिसमें एआई केवल सिफारिश देता है और अंतिम निर्णय मानव द्वारा लिया जाता है। इससे जवाबदेही भी तय रहती है और निर्णयों में मानवीय संवेदनशीलता भी बनी रहती है।

एआई प्रणाली की साइबर सुरक्षा को मजबूत करना

जैसे सैनिकों को बॉडी आर्मर की ज़रूरत होती है, वैसे ही एआई को ‘साइबर कवच’ की ज़रूरत है। एआई प्रणाली को हैकिंग, स्पूफिंग (नकली सिग्नल), डेटा पॉइज़निंग और मालवेयर से बचाने के लिए विशेष साइबर सुरक्षा उपाय किए जाने चाहिए। उदाहरण के लिए, एआई को इस तरह से प्रशिक्षित किया जाए कि अगर कोई संदिग्ध या विरोधाभासी डेटा आता है, तो वह तुरंत अलर्ट दे और स्वतः निर्णय लेने के बजाय मानव से पुष्टि मांगे। सैन्य संचार प्रणाली को अलग-अलग स्तर पर एन्क्रिप्शन (कूटलेखन) के ज़रिए सुरक्षित किया जाना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय नियम और आचार संहिता विकसित करना

एआई तकनीक पर अगर नियंत्रण न रखा जाए, तो यह वैश्विक असंतुलन पैदा कर सकती है। जैसे परमाणु हथियारों के लिए अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ बनी हैं, वैसे ही एआई आधारित युद्ध प्रणालियों के लिए भी वैश्विक नियम, आचार संहिताएँ और पारदर्शिता आवश्यक है। उदाहरण के लिए, यह तय किया जाना चाहिए कि किन परिस्थितियों में एआई आधारित हमला वैध माना जाएगा और किन मामलों में यह प्रतिबंधित होगा। संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक

मंचों पर देशों को साथ मिलकर “एआई के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए आचार संहिता” तैयार करनी चाहिए।

एआई मॉडल का लगातार परीक्षण और मान्यता प्रणाली

एआई कोई एक बार बनाकर छोड़ देने वाली चीज़ नहीं है। इसे लगातार वास्तविक परिस्थितियों में परीक्षण की आवश्यकता होती है – विभिन्न तरह की जटिल स्थितियों में, सीमित संसाधनों में और विरोधी चालों के जवाब में, परीक्षण के बाद एआई प्रणाली को प्रमाणित किया जाए ताकि वह सैन्य सेवा के लिए उपयुक्त है या नहीं। इस प्रक्रिया में ‘रेड टीमिंग’ जैसे उपाय किए जा सकते हैं, जहाँ विशेषज्ञ जानबूझकर एआई में त्रुटियाँ खोजने की कोशिश करते हैं।

एआई और इंसान की टीम वर्क को प्रोत्साहन देना

एआई को इंसान के विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि एक सहायक साथी के रूप में देखा जाना चाहिए। युद्ध क्षेत्र में एआई तेज़ी से जानकारी देगा, संभावित खतरों की पहचान करेगा, लेकिन उसका काम केवल सुझाव देना हो। इंसान की भूमिका रहे कि वह उस सुझाव को मंजूरी दे या खारिज करे। इसके लिए ऑपरेटरों को एआई तकनीक की अच्छी समझ और प्रशिक्षण देना भी बहुत आवश्यक है।

ऊर्जा कुशल और हल्के एआई प्रणाली का विकास

युद्ध के मैदान में सीमित बैटरी और संसाधन होते हैं। इसलिए एआई मॉडल ऐसे होने चाहिए जो कम ऊर्जा में, सीमित संसाधनों के साथ भी तेज़ी से काम कर सकें। इसके लिए ‘मॉडल कम्प्रेशन’, ‘एड्स कंप्यूटिंग’ और ‘क्लाउड-बेस्ड बैकअप’ जैसे तकनीकी उपाय उपयोग किए जा सकते हैं। इससे न केवल युद्ध प्रणाली हल्की और फुर्तीली होगी, बल्कि उसका संचालन भी अधिक टिकाऊ और भरोसेमंद बनेगा। इन सभी उपायों को अपनाकर ही हम एआई आधारित युद्ध प्रणालियों को अधिक सुरक्षित, विश्वसनीय और नैतिक बना सकते हैं। यदि तकनीक को नियंत्रित और पारदर्शी ढंग से अपनाया जाए, तो यह मानवता के लिए वरदान साबित हो सकती है। लेकिन यदि इसे बिना सोचे-समझे अपनाया गया, तो यह हमारे ही खिलाफ एक अनदेखा खतरा बन सकता है।

मानव एआई टीम

आज के तकनीकी युग में एक बड़ी बहस चल रही है: क्या एआई इंसानों की जगह ले लेगा? क्या मशीनें पूरी तरह से युद्ध का संचालन करने लगेंगी? इसका सीधा और स्पष्ट उत्तर है – नहीं। एआई का सबसे उपयुक्त और सुरक्षित उपयोग तब होता है जब वह इंसानों के साथ मिलकर काम करता है, न कि उन्हें पूरी तरह बदलने की कोशिश करता है। इसी को कहते हैं – मानव एआई टीम।

एआई और मानव के बीच टीम वर्क का मतलब है, एक ऐसा तंत्र बनाना जहाँ इंसान और मशीन दोनों अपनी-अपनी ताकतों का उपयोग करके मिलकर निर्णय लें। यह सहयोग युद्ध जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहाँ एक भी गलती जान-माल की बड़ी क्षति का कारण बन सकती है।

एआई की ताकत – गति और गणना

एआई को बड़ी मात्रा में डेटा को तेज़ी से स्कैन करने, पैटर्न पहचानने, और संभावित खतरों की भविष्यवाणी करने में महारत हासिल है। उदाहरण के



लिए: एआई सेकेंडों में हजारों रडार सिग्नल्स को स्कैन कर सकता है और बता सकता है कि इनमें से कौन-सा खतरा बन सकता है। यह पुरानी घटनाओं के आधार पर यह अनुमान भी लगा सकता है कि दुश्मन अगला कदम क्या उठा सकता है। लेकिन यह केवल गणित और आँकड़ों के आधार पर काम करता है। इसमें संवेदना, अनुभव और अंतर्ज्ञान की क्षमता नहीं होती।

मानव की ताकत – अनुभव, विवेक और नैतिकता

मनुष्य में जो सबसे अनमोल गुण होते हैं – जैसे अनुभव, सोचने की गहराई, नैतिकता और स्थिति की समझ – वे एआई में नहीं हो सकते। एक अनुभवी सैन्य अधिकारी यह समझ सकता है कि कोई सिग्नल खतरे से अधिक शायद छलावा हो। वह राजनीतिक, कूटनीतिक और मानवीय दृष्टिकोण से भी सोच सकता है कि किस कार्य का क्या प्रभाव पड़ेगा। यही गुण युद्ध जैसी अस्थिर परिस्थितियों में एआई को पूरक बनाते हैं, विकल्प नहीं।

क्यों जरूरी है मानव एआई टीम?

निर्णय की गुणवत्ता बढ़ती है: जब एआई और मानव मिलकर निर्णय लेते हैं, तो गणितीय तेज़ी और मानवीय विवेक दोनों मिलते हैं। इससे निर्णय तेज़, सटीक और संतुलित होते हैं।

गलती की संभावना घटती है: एआई गलती कर सकता है, खासकर जब उसे अज्ञात डेटा मिले। लेकिन यदि इंसान उसके निर्णय की समीक्षा करता है, तो गलती पकड़ में आ सकती है।

उत्तरदायित्व स्पष्ट रहता है: एआई यदि पूरी तरह से निर्णय लेता है, तो जवाबदेही तय करना मुश्किल हो जाता है। लेकिन यदि अंतिम निर्णय मानव का होता है, तो ज़िम्मेदारी स्पष्ट रहती है।

सैनिकों का आत्मविश्वास बढ़ता है – जब ऑपरेटर जानते हैं कि एआई केवल सुझाव दे रहा है और अंतिम निर्णय उनकी जानकारी और विवेक पर आधारित है, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। वे तकनीक को सहयोगी के रूप में देखते हैं, प्रतियोगी के रूप में नहीं।

मानव - एआई मेलजोल के लिए जरूरी पहलू

इंटरफेस - एआई प्रणाली का उपयोग करना आसान होना चाहिए। ऐसा डैशबोर्ड हो जहाँ ऑपरेटर को तुरंत खतरे, सुझाव और विकल्प दिखें, और वह उन पर कार्रवाई कर सके।

प्रशिक्षण: सैनिकों और ऑपरेटरों को एआई प्रणाली की कार्यप्रणाली, सीमाएँ और संभावनाएँ समझाई जानी चाहिए। उनका प्रशिक्षण केवल मशीन चलाने का नहीं, बल्कि उसकी सोच को समझने का होना चाहिए।

नियंत्रण बनाए रखना – एआई को कभी भी “पूर्ण नियंत्रण” नहीं दिया जाना चाहिए। स्वायत्ता हथियार प्रणाली में भी एक “कटऑफ़ स्विच” होना चाहिए जिससे किसी भी आपात स्थिति में इंसान हस्तक्षेप कर सके।

फीडबैक प्रणाली- एआई के निर्णयों का मूल्यांकन करने के लिए एक मजबूत फीडबैक प्रणाली होना चाहिए। इससे पता चलेगा कि किस निर्णय ने कितना लाभ या हानि पहुँचाई।

भविष्य की दिशा – “सहयोगी प्रज्ञान”

“सहयोगी प्रज्ञान” का मतलब है, इंसान और एआई की ऐसी साझेदारी जिसमें दोनों एक-दूसरे को मजबूत बनाते हैं। इंसान एआई को वास्तविक अनुभवों से बेहतर बनाता है, और एआई इंसान को अधिक विकल्प और सूचनाएँ देकर निर्णय में सहायता करता है। भविष्य की युद्ध प्रणालियाँ इस मॉडल पर आधारित होंगी। जहाँ मशीनें केवल आदेश नहीं लेंगी, बल्कि सुझाव देंगी और अंतिम निर्णय इंसान लेंगे।

अगर मानव एआई टीम नहीं हुए तो?

यदि एआई को पूरी तरह नियंत्रण दे दिया गया और इंसान केवल दर्शक बन गया, तो यह स्थिति बहुत खतरनाक हो सकती है: गलती से नागरिकों या मित्र सेनाओं पर हमला हो सकता है। युद्ध की शुरुआत किसी ‘गलत पहचान’ से हो सकती है। और सबसे बड़ी बात – किसी भी कार्रवाई की नैतिक या कानूनी ज़िम्मेदारी तय करना असंभव हो जाएगा। इसलिए यह स्पष्ट है कि एआई का बुद्धिमान उपयोग केवल “संयुक्त सहभागिता” से ही संभव है।

निष्कर्ष

एआई और इंसान दोनों की अपनी-अपनी ताकतें हैं। एक तेज़ और निष्कलंक गणना करता है, दूसरा सोचता, समझता और महसूस करता है। जब ये दोनों साथ काम करते हैं, तभी कोई तकनीक मानव हित में सशक्त रूप से उपयोग हो सकती है। एआई को सहयोगी के रूप में देखें – एक ऐसा साथी जो कभी थकता नहीं, कभी चूकता नहीं, लेकिन जो हर निर्णय से पहले अपने इंसानी कमांडर की अनुमति लेता है। यही है सही रास्ता- इंसानी समझ + मशीन की गति – सुरक्षित, सशक्त और जिम्मेदार युद्ध प्रणाली। एआई एक अद्भुत तकनीक है, लेकिन यह तभी फायदेमंद होगी जब इसे समझदारी, संयम और नियंत्रण के साथ लागू किया जाए। अगर इसे बिना नियम, बिना पारदर्शिता और बिना नैतिकता के लागू किया गया, तो यह लाभ के बजाय विनाश का कारण बन सकती है। एआई को एक ‘सहयोगी’ बनाकर इस्तेमाल करें, ‘निर्णायक’ नहीं। मानव विवेक को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। अगर ऐसा हुआ, तो एआई आने वाले समय में युद्ध के क्षेत्र में शांति का साधन भी बन सकती है – तेज़, सटीक और कम हानिकारक।

टिप्पण – इस लेख को वर्ष 2025 के दौरान उच्च तकनीकी लेखों की श्रेणी में बीईएल कारपोरेट स्तर पर द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

चेरूपुरी फणि माधुरी

प्रबंधक,

बीईएल हैदराबाद



राजभाषा लेख...



राजभाषा विभाग की स्वर्ण जयंती (1975-2025)



वर्ष 2025 राजभाषा विभाग के इतिहास में एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ। 26 जून 2025 को विभाग ने अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण किए। इस अवसर पर नई दिल्ली के भारत मंडपम में भव्य स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित किया गया, जिसमें केंद्रीय गृह मंत्री, गृह राज्य मंत्री, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, विभिन्न मंत्रालयों के प्रतिनिधि, राजभाषा अधिकारी, शिक्षाविद्, भाषा विशेषज्ञ तथा अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे।

स्वर्ण जयंती समारोह में 11 जुलाई 2025 को हैदराबाद में आयोजित 'दक्षिण संवाद' विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा, जिसका उद्देश्य दक्षिण भारत में हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के मध्य संवाद, सहयोग और भाषायी सौहार्द को प्रोत्साहित करना था।





राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार ने अब तक राष्ट्रभाषायी चेतना, प्रशासनिक उत्कृष्टता और डिजिटल भविष्य की ओर अग्रसर एक सुदीर्घ यात्रा तय करते हुए वर्ष 2025 में अपनी स्वर्ण जयंती मनाई। यह अवसर केवल अतीत की उपलब्धियों का उत्सव नहीं था, बल्कि प्रशासन, प्रौद्योगिकी और नागरिक सेवाओं में भारतीय भाषाओं के भविष्य का भी उत्सव था। इस गौरवशाली यात्रा को यादगार रूप देने के उद्देश्य से विभाग की स्थापना, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विकास के मुख्य चरणों का इस लेख में उल्लेख किया गया है।

स्थापना, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विकास यात्रा (1975–2000)

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार ने चरणबद्ध रूप से हिन्दी के संवर्धन तथा शासकीय कार्यों में उसके प्रयोग को प्रोत्साहित करने के अनेक प्रयास किए। इन प्रयासों को संस्थागत स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से 26 जून 1975 को भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग की स्थापना की गई। स्थापना के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत हैं:

- संविधान के राजभाषा संबंधी प्रावधानों का कार्यान्वयन
- राजभाषा अधिनियम एवं नियमों का अनुपालन
- मंत्रालयों एवं विभागों में हिन्दी का प्रगतिशील प्रयोग
- हिन्दी प्रशिक्षण
- अनुवाद व्यवस्था का सुदृढीकरण
- तकनीकी एवं वैज्ञानिक हिन्दी का विकास
- राजभाषा निरीक्षण
- संसदीय राजभाषा समिति को सहयोग

स्थापना के समय विभाग के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती थी, विविध प्रशासनिक तंत्र में राजभाषा नीति का प्रभावी और व्यवहारिक क्रियान्वयन। इसके लिए विभाग ने हिन्दी प्रशिक्षण, कार्यालयी शब्दावली, अनुवाद, प्रोत्साहन योजनाएँ, निरीक्षण प्रणाली, और वार्षिक कार्यक्रम शामिल करते हुए एक बहुआयामी रणनीति पर अमल किया और भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में राजभाषा अनुभाग स्थापित होने लगे।

राजभाषा विभाग ने यह समझा कि किसी भाषा का प्रयोग आदेश से नहीं, बल्कि दक्षता से बढ़ता है। इसी दृष्टि से कर्मचारियों के लिए हिन्दी भाषा, हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण प्रारम्भ किए गए। बाद के वर्षों में यही व्यवस्था केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से व्यापक रूप ग्रहण करती गई।

विभाग ने प्रत्येक मंत्रालय में प्रगति का मूल्यांकन, समस्याओं का समाधान, अधिकारियों की सहभागिता एवं त्रैमासिक समीक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से राजभाषा कार्यान्वयन समिति के गठन को प्रोत्साहित किया। यही मॉडल आगे चलकर देशभर के हजारों सरकारी कार्यालयों में सफलतापूर्वक अपनाया गया।

राजभाषा विभाग की सर्वाधिक सफल पहलों में से एकनगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन। इन समितियों के माध्यम से विभिन्न

मंत्रालय, सार्वजनिक उपक्रम, बैंक, बीमा संस्थाएँ एक ही नगर में समन्वित रूप से कार्य करने लगे। इससे अनुभवों का आदान-प्रदान बढ़ा तथा राजभाषा कार्यान्वयन को नई गति मिली।

विभाग ने केवल दिशा-निर्देश जारी करने तक स्वयं को सीमित नहीं रखा। उसने निरीक्षण, मूल्यांकन, प्रगति रिपोर्ट, सुधारात्मक सुझाव की सुव्यवस्थित प्रणाली विकसित की। आज यह व्यवस्था विभाग की सबसे प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्थाओं में गिनी जाती है।

सरकारी प्रशासन में अधिसूचनाएँ, नियम, संसद के दस्तावेज, वार्षिक प्रतिवेदन, तकनीकी पुस्तिकाएँ, आदि बड़े पैमाने पर अनूदित होने लगीं। इस कार्य के लिए विभाग ने शब्दावली, मानक शैली, अनुवाद दिशा-निर्देश विकसित किए।

प्रोत्साहन सदैव प्रशासनिक सुधार का महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। इसी विचार के आधार पर विभाग ने समय-समय पर विभिन्न पुरस्कार योजनाएँ प्रारम्भ कीं। इनका उद्देश्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, नवाचार, उत्कृष्ट कार्य, राजभाषा के प्रति सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना था।

1975-2000: संस्थागत विकास का स्वर्णिम प्रथम चरण के दौरान विभाग ने प्रशासनिक संरचना विकसित की, प्रशिक्षण व्यवस्था स्थापित की, निरीक्षण प्रणाली बनाई, राजभाषा समितियों का राष्ट्रीय नेटवर्क खड़ा किया, मंत्रालयों में हिन्दी कार्यान्वयन को संस्थागत रूप दिया, और हिन्दी को प्रशासनिक कार्य की व्यवहारिक भाषा बनाने की दिशा में ठोस आधार तैयार किया।

वर्ष 1975 से 2000 तक राजभाषा विभाग एक ऐसे सशक्त संस्थागत ढाँचे के रूप में विकसित हो चुका था जिसने भारत सरकार के लगभग प्रत्येक मंत्रालय, विभाग, बैंक, सार्वजनिक उपक्रम तथा स्वायत्त निकाय में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थायी व्यवस्था स्थापित कर दी। इस कालखंड की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि हिन्दी का प्रयोग केवल औपचारिकता न रहकर प्रशासनिक संस्कृति का अभिन्न अंग बनने लगा। प्रशिक्षण, निरीक्षण, अनुवाद, शब्दावली निर्माण, राजभाषा समितियों तथा प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से विभाग ने एक ऐसा आधार तैयार किया जिस पर आने वाले दशकों में डिजिटल एवं प्रौद्योगिकी आधारित राजभाषा व्यवस्था का निर्माण संभव हुआ।

संस्थागत विस्तार एवं आधुनिकीकरण (2000–2014)

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था सूचना प्रौद्योगिकी, ई-गवर्नेंस, वैश्वीकरण तथा डिजिटल संचार को अपनाते हुए एक नए दौर में प्रवेश किया और शासन-प्रशासन की कार्यशैली बदल गया। सरकारी कार्यालयों में कम्प्यूटर आधारित कार्य, ई-मेल, डिजिटल अभिलेखन तथा ऑनलाइन सेवाओं का उपयोग बढ़ने लगा। ऐसे परिवर्तित परिवेश में राजभाषा विभाग के समक्ष एक नई चुनौती थी – राजभाषा नीति को डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना, ताकि हिन्दी का प्रयोग पारंपरिक कार्यालयी कार्य तक सीमित न रहकर आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी आधारित प्रशासन का भी अभिन्न अंग बन सके।

वर्ष 2000 से 2014 तक का समय इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इस अवधि में विभाग ने न केवल अपने संस्थागत ढाँचे को सुदृढ़ किया, बल्कि तकनीकी नवाचार, प्रशिक्षण, निगरानी तथा प्रोत्साहन के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन को नई गति प्रदान की।

भारत सरकार ने इस अवधि में ई-गवर्नेंस को प्राथमिकता दी जिससे मंत्रालयों एवं विभागों में फाइलों का डिजिटलीकरण, ई-ऑफिस, ई-मेल आधारित संचार तथा ऑनलाइन सूचना प्रबंधन प्रणालियाँ विकसित होने लगीं। प्रारम्भिक वर्षों में अधिकांश सॉफ्टवेयर अंग्रेज़ी-केंद्रित थे, जिसके कारण हिन्दी में कार्य करना तकनीकी रूप से कठिन था।

राजभाषा विभाग ने इस चुनौती को अवसर के रूप में स्वीकार किया। विभाग ने विभिन्न तकनीकी संस्थानों, भाषा विशेषज्ञों तथा मंत्रालयों के सहयोग से कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रभावी उपयोग के लिए आवश्यक मानकों, दिशा-निर्देशों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया। इससे हिन्दी धीरे-धीरे डिजिटल प्रशासन की कार्यशील भाषा बनने लगी।

इस काल की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक थी यूनिकोड आधारित हिन्दी कम्प्यूटिंग का व्यापक स्वीकार। यूनिकोड ने विभिन्न फॉन्टों के बीच असंगति को समाप्त कर हिन्दी में दस्तावेज़ तैयार करना, संग्रहित करना और इंटरनेट पर साझा करना सरल बना दिया।

राजभाषा विभाग ने मंत्रालयों को यूनिकोड अपनाने के लिए प्रेरित किया तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और दिशा-निर्देशों के माध्यम से इसके उपयोग को प्रोत्साहित किया। परिणामस्वरूप हिन्दी में ई-मेल, नोटशीट, पत्राचार, प्रतिवेदन तथा वेबसाइट सामग्री तैयार करना पहले की तुलना में कहीं अधिक सुगम हुआ।

राजभाषा विभाग ने भी कम्प्यूटर प्रशिक्षण अपनाया। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आधुनिक विषयों को सम्मिलित किया गया। हिन्दी भाषा प्रशिक्षण के साथ-साथ कम्प्यूटर आधारित अभ्यास, तकनीकी शब्दावली, कार्यालयी संप्रेषण और ई-गवर्नेंस से संबंधित मॉड्यूल जोड़े गए। इससे कर्मचारियों का आत्मविश्वास बढ़ा और हिन्दी में कार्य करने की गति एवं गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

इस अवधि में राजभाषा निरीक्षण प्रणाली को और अधिक व्यवस्थित एवं परिणामोन्मुख बनाया गया। निरीक्षण का उद्देश्य केवल नियमों के अनुपालन की जाँच नहीं रहा, बल्कि कार्यालयों को व्यवहारिक मार्गदर्शन प्रदान करना भी था। निरीक्षण प्रतिवेदनों के आधार पर कार्यालयों को सुधारात्मक सुझाव दिए जाते थे, जिससे कार्यान्वयन की गुणवत्ता में निरंतर वृद्धि हुई।

राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम इस अवधि में और अधिक प्रभावी बनें। इनमें विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किए गए – जैसे पत्राचार, प्रकाशन, प्रशिक्षण, बैठकों, वेबसाइटों तथा सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी के उपयोग का प्रतिशत बढ़ाना। इन कार्यक्रमों ने राजभाषा कार्यान्वयन को योजनाबद्ध,

मापनीय और उत्तरदायी बनाया। विभिन्न कार्यालय अपनी प्रगति का नियमित मूल्यांकन करने लगे और राजभाषा कार्य अब वार्षिक प्रशासनिक योजना का महत्वपूर्ण भाग बन गया।

राजभाषा विभाग और संसदीय राजभाषा समिति के मध्य समन्वय इस अवधि में और अधिक सुदृढ़ हुआ। राजभाषा विभाग ने समिति को आवश्यक तथ्य, आँकड़े, प्रतिवेदन तथा प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराया। समिति द्वारा विभिन्न मंत्रालयों, सार्वजनिक उपक्रमों तथा बैंकों का निरीक्षण कर राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की जाती रही। समिति की अनुशंसाओं के आधार पर अनेक सुधारात्मक कदम उठाए गए। इस प्रक्रिया ने राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन में संसदीय उत्तरदायित्व और प्रशासनिक कार्यान्वयन के बीच एक सशक्त सेतु का कार्य किया।

इस अवधि में देश के विभिन्न नगरों में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) का उल्लेखनीय विस्तार हुआ। इनके माध्यम से केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों, बीमा संस्थानों तथा सार्वजनिक उपक्रमों के बीच समन्वय और अनुभवों का आदान-प्रदान बढ़ा। समितियों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताएँ, कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम राजभाषा प्रचार-प्रसार के प्रभावी माध्यम बनें। अनेक नगरों में स्थानीय स्तर पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों को सम्मानित किया जाने लगा।

राजभाषा विभाग ने मंत्रालयों और विभागों में नियमित हिन्दी कार्यशालाओं को प्रोत्साहित किया। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य केवल नियमों की जानकारी देना नहीं था, बल्कि कर्मचारियों को दैनिक कार्यालयी कार्य – जैसे टिप्पण, प्रारूपण, ई-मेल, प्रतिवेदन, नोटशीट तथा तकनीकी लेखन – में हिन्दी का व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था। इस पहल से हिन्दी में मूल लेखन की प्रवृत्ति को बल मिला और अनुवाद पर अत्यधिक निर्भरता में कमी आई।

इस काल में राजभाषा पुरस्कार योजनाओं का दायरा और प्रभाव दोनों बढ़े। मंत्रालयों, विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों तथा बैंकों में उत्कृष्ट राजभाषा कार्य के लिए विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किए जाने लगे। इन पुरस्कारों ने न केवल राजभाषा कार्यान्वयन को गति दी, बल्कि अधिकारियों और कर्मचारियों में नवाचार तथा गुणवत्ता के प्रति सकारात्मक प्रतिस्पर्धा भी विकसित की।

विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वित्त, बैंकिंग, विधि तथा प्रशासन जैसे क्षेत्रों में मानकीकृत हिन्दी शब्दावली की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही थी। राजभाषा विभाग ने संबंधित संस्थाओं के सहयोग से तकनीकी शब्दों के उपयोग, मानकीकरण तथा प्रसार पर विशेष बल दिया। इससे हिन्दी में विशेषज्ञता-आधारित लेखन और प्रशासनिक दस्तावेज़ों की गुणवत्ता में सुधार हुआ।

इस अवधि में राजभाषा नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम नागरिक-केंद्रित प्रशासन भी था। विभाग ने यह सुनिश्चित करने पर बल दिया कि नागरिकों को उपलब्ध कराई जाने वाली सूचनाएँ, प्रपत्र, आवेदन-पत्र तथा सेवाएँ हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं में अधिकाधिक उपलब्ध हों। इससे प्रशासन और नागरिकों के बीच संवाद की दूरी कम हुई तथा सुशासन की अवधारणा को बल मिला।



वर्ष 2000 से 2014 का कालखंड राजभाषा विभाग की विकास यात्रा में संक्रमण और परिवर्तन का युग था। यदि प्रथम पच्चीस वर्षों में विभाग ने संस्थागत आधार निर्मित किया था, तो इस अवधि में उस आधार को आधुनिक तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप सुदृढ़ किया गया। हिन्दी कम्प्यूटिंग, यूनिकोड, प्रशिक्षण के आधुनिकीकरण, गुणवत्ता-आधारित निरीक्षण तथा वार्षिक कार्यक्रमों की प्रभावशीलता ने राजभाषा कार्यान्वयन को एक नई दिशा प्रदान की। इन प्रयासों ने आगामी दशक में डिजिटल नवाचार, ऑनलाइन प्रशिक्षण, भाषा प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा बहुभाषी ई-गवर्नेंस के लिए मजबूत आधार तैयार किया। इस प्रकार, वर्ष 2014 तक राजभाषा विभाग केवल नीति-निर्माण और निरीक्षण करने वाला विभाग नहीं रह गया था, बल्कि वह भारत सरकार के डिजिटल प्रशासन में भारतीय भाषाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने वाला एक अग्रणी संस्थान बन चुका था।

डिजिटल परिवर्तन, नवाचार और स्वर्ण जयंती का गौरवशाली दशक (2014-2025)



वर्ष 2014 के बाद 'डिजिटल इंडिया' अभियान ने शासन की कार्यप्रणाली में व्यापक परिवर्तन किया। सरकारी कार्यालयों में ई-ऑफिस, डिजिटल फाइल प्रणाली, ऑनलाइन सेवाएँ, मोबाइल अनुप्रयोग और क्लाउड आधारित प्रणालियों का तेजी से विस्तार हुआ।

इस परिवर्तित परिदृश्य में राजभाषा विभाग ने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ डिजिटल प्रशासन की मुख्यधारा में समान रूप से सहभागी बनें। विभाग ने पारंपरिक राजभाषा कार्यान्वयन से आगे बढ़कर भाषा प्रौद्योगिकी, ऑनलाइन प्रशिक्षण, डिजिटल शब्दावली, ई-लर्निंग, मशीन अनुवाद और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित समाधानों को अपनाने की दिशा में उल्लेखनीय पहल की। परिणामस्वरूप, 2014 से 2025 का दशक राजभाषा विभाग के इतिहास का सर्वाधिक नवाचारी और परिवर्तनकारी काल सिद्ध हुआ।

डिजिटल इंडिया के मूल मंत्र को अपनाते हुए राजभाषा विभाग ने मंत्रालयों, विभागों तथा सार्वजनिक उपक्रमों को द्विभाषी वेबसाइटें विकसित करने,

डिजिटल सामग्री हिन्दी में उपलब्ध कराने और यूनिकोड आधारित हिन्दी कम्प्यूटिंग को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवधि में राजभाषा कार्य का मूल्यांकन केवल पत्राचार तक सीमित नहीं रहा, बल्कि ई-ऑफिस, वेबसाइट, सोशल मीडिया, डिजिटल प्रकाशन, ऑनलाइन प्रशिक्षण तथा इलेक्ट्रॉनिक अभिलेखों में हिन्दी के उपयोग को भी महत्व दिया जाने लगा।

राजभाषा विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में ई-महाशब्दकोश (e-Mahashabdakosh) का विकास विशेष उल्लेखनीय है। यह डिजिटल मंच प्रशासन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वित्त, विधि, बैंकिंग तथा अन्य क्षेत्रों की मानकीकृत हिन्दी शब्दावली को एक स्थान पर उपलब्ध कराता है। ई-महाशब्दकोश के माध्यम से अधिकारियों, अनुवादकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों को अद्यतन तकनीकी शब्दों तक त्वरित पहुँच प्राप्त हुई। इससे सरकारी दस्तावेजों में एकरूपता, शुद्धता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण सहायता मिली।

डिजिटल युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने लीला (LILA - Learn Indian Languages with AI) पोर्टल विकसित कराया। यह मंच कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित ऑनलाइन भाषा-अधिगम प्रणाली है, जिसके माध्यम से हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं का अध्ययन सरल, रोचक और सुलभ बनाया गया है।

राजभाषा विभाग ने भाषा अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से 'कंठस्थ' जैसे डिजिटल साधनों को भी बढ़ावा दिया। इनका उद्देश्य हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों, वाक्यों तथा व्यवहारिक अभिव्यक्तियों को सरल ढंग से सीखने में सहायता प्रदान करना है। मोबाइल और वेब आधारित ऐसे साधनों ने भाषा प्रशिक्षण को पारंपरिक कक्षा से निकालकर डिजिटल मंच तक पहुँचाया।

राजभाषा विभाग का आधिकारिक पोर्टल समय के साथ एक समेकित डिजिटल मंच के रूप में विकसित हुआ। इस पोर्टल परवार्षिक राजभाषा कार्यक्रम, अधिनियम एवं नियम, प्रशिक्षण सामग्री, कार्यालयी शब्दावली, परिपत्र, प्रकाशन, पुरस्कार योजनाएँ, ऑनलाइन आवेदन, डिजिटल संसाधन आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध कराए गए। इससे देशभर के राजभाषा अधिकारियों, कर्मचारियों तथा शोधकर्ताओं को अद्यतन जानकारी सहज रूप से उपलब्ध होने लगी।

कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन प्रशिक्षण की आवश्यकता बढ़ी। राजभाषा विभाग ने इस आपदा को अवसर में बदलते हुए वेबिनार, वर्चुअल कार्यशालाओं, ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल और डिजिटल अध्ययन सामग्री का व्यापक उपयोग प्रारम्भ किया। इससे देश के दूरस्थ क्षेत्रों में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारी भी प्रशिक्षण से जुड़ सके। ऑनलाइन माध्यमों ने प्रशिक्षण को अधिक लचीला, सुलभ और लागत-प्रभावी बनाया। यह परिवर्तन भविष्य की मिश्रित (Hybrid) प्रशिक्षण व्यवस्था की आधारशिला सिद्ध हुआ।

विभिन्न मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समितियाँ इस अवधि में और अधिक सक्रिय हुईं। इनमें भाषा विशेषज्ञ, साहित्यकार, सांसद तथा वरिष्ठ अधिकारी सम्मिलित होकर राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के संबंध में सुझाव प्रदान करते रहे। राजभाषा विभाग ने इन समितियों के समन्वय, कार्यवृत्त तथा अनुशंसाओं के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राजभाषा विभाग द्वारा संचालित विभिन्न पुरस्कार योजनाओं ने इस अवधि में व्यापक पहचान प्राप्त की। उत्कृष्ट राजभाषा कार्य करने वाले मंत्रालयों, विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों, बैंकों तथा कर्मचारियों को सम्मानित किया जाने लगा। इन पुरस्कारों ने राजभाषा कार्यान्वयन में गुणवत्ता, नवाचार और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित किया।

आगे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन अनुवाद, वाक्-पहचान (Speech Recognition), प्राकृतिक भाषा संसाधन (NLP) तथा भाषा तकनीक का महत्व तीव्रता से बढ़ा। राजभाषा विभाग ने इन उभरती तकनीकों के उपयोग की संभावनाओं पर बल दिया, ताकि प्रशासनिक कार्यों में अनुवाद, शब्दावली, प्रशिक्षण तथा नागरिक सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके। यदि 1975 से 2000 का काल संस्थागत निर्माण का और 2000 से 2014 का काल आधुनिकीकरण का युग था, तो 2014 से 2025 का दशक डिजिटल परिवर्तन, नवाचार और वैश्विक दृष्टि का काल कहा जा सकता है। इस अवधि में राजभाषा विभाग ने परंपरागत प्रशासनिक भूमिका से आगे बढ़कर भाषा प्रौद्योगिकी, डिजिटल शासन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में उल्लेखनीय पहल की।

पाँच दशकों की इस यात्रा में विभाग ने समय के साथ स्वयं को निरंतर रूपांतरित किया – पारंपरिक कार्यालयी हिन्दी से लेकर डिजिटल प्रशासन, ऑनलाइन शिक्षण, भाषा प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित समाधानों तक। यही निरंतर विकास इसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

अमृतकाल में राजभाषा विभाग की भूमिका

भारत अमृतकाल की ओर अग्रसर है। ऐसे समय में राजभाषा विभाग की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। राजभाषा विभाग का आगामी लक्ष्य केवल हिन्दी का संवर्धन नहीं, बल्कि संविधान की भावना के अनुरूप भारतीय भाषाओं के समन्वित विकास के माध्यम से सुशासन, सुगम प्रशासन और नागरिक सहभागिता को सुदृढ़ करना है। भविष्य की राजभाषा व्यवस्था केवल दस्तावेजों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि बहुभाषी डिजिटल सेवाओं, चैटबॉट, स्वचालित अनुवाद और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुप्रयोगों के माध्यम से नागरिकों तक पहुँचेगी।

राजभाषा विभाग कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा समाधान, बहुभाषी ई-गवर्नेंस, स्वचालित अनुवाद प्रणाली, भारतीय भाषाओं का डिजिटल कॉर्पस, साइबर प्रशासन में हिन्दी का विस्तार, मोबाइल आधारित भाषा अधिगम, नागरिक सेवाओं का बहुभाषीकरण, भाषा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अंतर-मंत्रालयी सहयोग, जैसे क्षेत्रों को प्राथमिकता देते हुए भविष्य की नींव रखेगी। स्वर्ण जयंती समारोह ने इस पचास वर्षीय यात्रा का उत्सव मनाने के साथ-साथ भविष्य की दिशा भी स्पष्ट की – एक ऐसा भारत, जहाँ शासन

नागरिक की भाषा में, तकनीक के माध्यम से और अधिक प्रभावी, समावेशी तथा सुलभ हो।

1975-2025 : पचास वर्षों की विस्तृत समयरेखा

वर्ष	प्रमुख घटना
1975	गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग की स्थापना (26 जून)
1976	राजभाषा नियम लागू; कार्यान्वयन का संस्थागत ढाँचा विकसित
1977-1980	हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार
1980-1985	कार्यालयों में राजभाषा अनुभागों का सुदृढ़ीकरण
1985-1990	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (TOLIC) का विस्तार
1990-1995	अनुवाद व्यवस्था एवं तकनीकी शब्दावली का विकास
1996-2000	सूचना प्रौद्योगिकी की तैयारी; कम्प्यूटर आधारित हिन्दी कार्य का आरम्भ
2000-2004	ई-गवर्नेंस के अनुरूप राजभाषा कार्य की नई रणनीति
2005-2008	यूनिकोड आधारित हिन्दी कम्प्यूटिंग को बढ़ावा
2009-2013	ऑनलाइन संसाधन, द्विभाषिक वेबसाइटें एवं प्रशिक्षण का विस्तार
2014	डिजिटल इंडिया के साथ राजभाषा कार्य का एकीकरण
2015-2018	डिजिटल शब्दावली, ई-संसाधन एवं भाषा प्रौद्योगिकी पर बल
2019-2021	ऑनलाइन प्रशिक्षण, वेबिनार एवं वर्चुअल कार्यशालाएँ
2022-2024	AI-आधारित भाषा अधिगम, LILA, डिजिटल पहले
2025	स्वर्ण जयंती समारोह एवं भविष्य की डिजिटल राजभाषा दृष्टि

वी सुरेश कुमार
उप प्रबंधक (राजभाषा)/मा.सं.





टिप्पण लेखन कौशल

टिप्पण वह प्रक्रिया है जिसमें किसी पत्र / फाइल पर विषय को समझकर संक्षेप में विचार, तथ्य, नियम और सुझाव लिखे जाते हैं, ताकि अधिकारी निर्णय ले सकें।

टिप्पण की विशेषताएँ

- संक्षिप्त और स्पष्ट भाषा
- क्रमबद्ध बिंदु
- तटस्थ और औपचारिक शैली
- नियमों / तथ्यों पर आधारित
- अनावश्यक शब्दों से बचाव

टिप्पण लिखने की विधि

- विषय का उल्लेख
- तथ्य / पृष्ठभूमि
- समस्या या मांग
- नियम / प्रावधान (यदि हो)
- सुझाव या अनुशंसा
- हस्ताक्षर / नाम / तिथि

उदाहरण

विषय – कार्यालय में एक हिंदी टंकक का पद सृजित करने के संबंध में।
राजभाषा नियमों के अनुसार केंद्रीय सरकार के कार्यालय में एक हिंदी टंकक के पद का होना आवश्यक है। उल्लेखनीय है कि इस कार्यालय में कोई भी हिंदी टंकक नहीं है और अब तक यह पद सृजित नहीं किया गया है। अतः प्रस्ताव है कि कार्यालय में एक हिंदी टंकक पद की सवीकृति प्रदान की जाए। अनुमोदनार्थ सादर प्रस्तुत।

मसौदा लेखन

मसौदा का अर्थ, नोटिंग के आधार पर अंतिम पत्र, आदेश, सूचना या ज्ञापन का औपचारिक मसौदा तैयार करना है।

मसौदा की विशेषताएँ

- स्पष्ट और शिष्ट भाषा
- औपचारिक प्रारूप
- उद्देश्य
- संक्षिप्त लेकिन पूर्ण
- शुद्ध व्याकरण

मसौदा के प्रकार

- पत्र
- कार्यालय आदेश
- सूचना / परिपत्र
- ज्ञापन

मसौदा लिखने की संरचना

- प्रेषक का नाम / पद
- प्राप्तकर्ता
- विषय
- संदर्भ
- मुख्य विषयवस्तु
- समापन
- हस्ताक्षर / पद

उदाहरण

प्रेषक: प्रधानाचार्य

विषय: कार्यालय में एक हिंदी टंकक का पद सृजित करने के संबंध में।
उपर्युक्त विषय के संदर्भ में सूचित किया जाता है कि कार्यालय में एक हिंदी टंकक के पद को सृजित करने की अनुमति प्रदान की जाती है। संबंधित समिति को आवश्यक कार्रवाई करने के लिए निर्देश दिए जाते हैं।

धन्यवाद।

टिप्पण और मसौदा में अंतर

टिप्पण	मसौदा
विचार प्रक्रिया	अंतिम निर्णय
फाइल के अंदर	बाहर भेजा जाने वाला
सुझावात्मक	आदेशात्मक
संक्षिप्त	औपचारिक

उपरोक्त से स्पष्ट होता है कि टिप्पण कला कार्यालयी कार्यों का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके माध्यम से किसी विषय से संबंधित तथ्यों, नियमों एवं सुझावों को संक्षिप्त, स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है। प्रभावी नोटिंग से निर्णय प्रक्रिया सरल, त्वरित और पारदर्शी बनती है। यह न केवल प्रशासनिक दक्षता बढ़ाती है, बल्कि अभिलेखों के उचित रख-रखाव में भी सहायक होती है। अतः प्रत्येक कर्मचारी एवं अधिकारी के लिए टिप्पण कला का ज्ञान और उसका कुशल प्रयोग आवश्यक है, ताकि कार्यालयीन कार्य सुचारु रूप से संचालित हो सकें।

वी सुरेश कुमार

उप प्रबंधक (राजभाषा)/मा.सं.



कार्यालयी पत्राचार

कार्यालयी पत्राचार को सरकारी पत्राचार या शासकीय पत्राचार भी कहा जाता है। ये पत्र सामान्यतः एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय को शासकीय कामकाज के सिलसिले में लिखे जाते हैं। कार्यालयी पत्राचार के प्रमुख विशेषताएँ निम्नानुसार हैं:

- ये पत्र एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय को लिखे जाते हैं।
- इन पत्रों की विषयवस्तु सरकारी कामकाज से संबंधित होती है।
- कार्यालयी पत्र आम जनता सहित सरकारी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को भी भेजे जाते हैं।
- ये पत्र शासकीय अधिकारियों या कर्मचारियों द्वारा लिखे जाते हैं।

कार्यालयी पत्र के गुण

- पत्र तथ्यात्मक तथा स्पष्ट होने चाहिए।
- कार्यालयी पत्र जहाँ तक सम्भव हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।
- विषय का प्रतिपादन तर्कसंगत, आवश्यक संदर्भों से युक्त तथा सटीक होना चाहिए।
- विषयवस्तु आवश्यकतानुसार अनुच्छेदों में विभक्त होनी चाहिए।
- कार्यालयी पत्र में पिछले पत्र (यदि कोई हो) का संदर्भ देना चाहिए।
- कार्यालयी पत्रों को प्रचलित निश्चित प्रारूप में ही लिखा जाना चाहिए।
- प्रभावोत्पादकता, नम्रता, शिष्टाचार आदि गुणों का समावेश होना चाहिए।
- पत्र के अंत में स्वनिर्देश, हस्ताक्षर एवं अधिकारी की मुहर होना आवश्यक है।
- कार्यालयी पत्रों में तथ्यों का मात्र औपचारिक विवरण होना चाहिए।

सरकारी कार्यालयों में विविध प्रकार के दस्तावेज

सरकारी कामकाज में निम्नलिखित राजभाषा नियम की धारा 3(3) के अनुसार कुल 14 प्रकार के दस्तावेज होते हैं जिन्हें पूर्णतः द्विभाषा में जारी करना अनिवार्य है।

- 1) सामान्य आदेश
- 2) संकल्प
- 3) परिपत्र
- 4) नियम
- 5) अधिसूचना
- 6) प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन
- 7) प्रेस विज्ञप्ति
- 8) संसद के किसी सदन या सदनो के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र
- 9) संविदाएं
- 10) करार
- 11) अनुज्ञप्तियां
- 12) अनुज्ञापत्र
- 13) सूचना
- 14) निविदा-प्रारूप।

शासकीय पत्र

शासकीय पत्र से आशय उस पत्र से है जो किसी कार्यालय के पदाधिकारी द्वारा किसी अन्य कार्यालय के पदाधिकारी को या व्यक्ति विशेष को लिखा जाता है। इसे सरकारी पत्र भी कहा जाता है। चूंकि, कार्यालयी पत्रों का संचालन कार्यालयी पत्रावली के अनुसार होता है, इसलिए कार्यालयी पत्रों में

विशेष बात पत्र क्रमांक तथा पत्र जारी किए जाने वाली दिनांक का होता है। उदाहरण के लिए प.क्र.-70/ कॉ.का.बी.ई.एल./नि//2025/132 दिनांकित 29.04.2017।

अर्धशासकीय पत्र

जब कोई सरकारी अधिकारी कार्य के लिए अन्य किसी सरकारी अधिकारी को व्यक्तिगत नाम से अपेक्षित सूचनाओं, स्पष्टीकरण एवं किसी समस्या पर राय जानने के लिए कोई पत्र प्रेषित करता है अथवा कोई बात पूछता है या किसी बात पर ध्यानाकर्षण करता है तो वह पत्र व्यक्तिगत पत्र शैली में लिखा होने के कारण उसे अर्धशासकीय या अर्धसरकारी पत्र कहते हैं।

अनुस्मारक

पूर्व में लिखे गए किसी पत्र की अनुपालन न होने पर पत्र प्राप्त करने वाले को प्रेषक (पत्र भेजने वाले) की ओर से पुनः स्मरण कराया जाता है अर्थात् जवाब देने हेतु याद दिलाया जाता है तो ऐसे पत्रों को अनुस्मारक / स्मरण पत्र कहते हैं। इसकी विषय वस्तु संक्षिप्त होती है। इससे विषय के नीचे संदर्भ लगाकर पूर्व के क्रमांक एवं दिनांक का उल्लेख उसी प्रारूप (सरकारी प्रारूप) में लिखा जाता है जिस प्रारूप में पूर्व पत्र लिखा गया था।

कार्यालय आदेश

जब कोई अधिकारी अपने कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों एवं अधीनस्थ अधिकारियों को आदेश, निर्देश या सूचनाएँ प्रेषित करता है तो कार्यालय आदेश का प्रयोग किया जाता है। नियुक्ति, नियमों, अवकाशों आदि की सूचनाओं में भी कार्यालय आदेश का प्रयोग किया जाता है।

कार्यालय आदेश लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें –

- इसमें संबोधन, स्वनिर्देश का प्रयोग नहीं किया जाता।
- आदेश देने वाले अधिकारी का नाम तथा पदनाम अंकित होना आवश्यक है।
- भाषा सरल तथा स्पष्ट एवं अर्थ बोधगम्य होनी चाहिए।
- पत्र संख्या के उपरांत कार्यालय का नाम, पता तथा दिनांक होनी चाहिए।
- जिन कार्यालयों या विभागों को इसकी प्रतिलिपि भेजी गई हो उसका उल्लेख नीचे बायीं ओर किया जाता है।

कार्यालय ज्ञापन

सरकार के विभिन्न मंत्रालय आपसी सूचनाओं के आदान – प्रदान के लिए शासकीय पत्र का प्रयोग न करके कार्यालय ज्ञापन का प्रयोग करते हैं।



इस तरह कार्यालय ज्ञापन अंतर मंत्रालय पत्र व्यवहार का एक प्रमुख रूप है। कार्यालय ज्ञापन लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें –

- कार्यालय ज्ञापन में संबोधन तथा स्वनिर्देश नहीं होता।
- जिसे ज्ञापन भेजा जा रहा है उसका नाम, पदनाम तथा पता कार्यालय ज्ञापन के नीचे बायीं ओर लिखा जाता है।
- विषय वस्तु के बाद भेजने वाले के हस्ताक्षर एवं पदनाम लिखा जाता है।
- प्रतिलिपियां जिन्हें प्रेषित की गई हों, उनके विवरण का भी उल्लेख किया जाता है।
- जिस अधिकारी के आदेश से ये प्रतिलिपियां प्रेषित की गई, उसके निर्देश का भी उल्लेख किया जाता है।
- कार्यालय ज्ञापन सदैव अन्य पुरुष शैली में लिखा जाता है।

विज्ञप्ति

जब कोई सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्था अपने किसी निर्णय, निश्चय, निर्देश, घोषणा, योजना आदि सूचनाओं को संबंधित व्यक्तियों एवं आम जनता तक पहुँचाना चाहती है तब विज्ञप्ति का उपयोग किया जाता है।

विज्ञप्ति के मुख्य रूप से छह घटक होते हैं:

- कार्यालय का नाम एवं पता का उल्लेख होता है।
- पत्र क्रमांक एवं दिनांक अवश्य लिखे जाते हैं।
- शीर्षक तथा विज्ञप्ति संख्या का उल्लेख किया जाता है।
- विज्ञप्ति की विषयवस्तु से संबंधित शीर्षक इसलिए दिया जाता है ताकि विज्ञप्ति संबंधित पाठको को सहज ही अपनी और आकृष्ट कर सके।
- विज्ञप्ति की सामग्री का उल्लेख किया जाता है।
- विज्ञप्ति जारी करने वाले अधिकारी का पदनाम सबसे नीचे दायीं ओर लिखा जाता है।

प्रेस विज्ञप्ति

वह सरकारी घोषणाएँ जिनका संबंध जन-साधारण से होता है, प्रमुख समाचार पत्रों में भी प्रकाशित कराई जाती हैं। ऐसी सूचनाओं को प्रेस विज्ञप्ति कहा जाता है और इन्हें यथावत् रूप से समाचार पत्रों में प्रकाशित करने की प्रार्थना की जाती है। प्रेस विज्ञप्ति पूर्ण रूप से औपचारिक होती है। अतः इनका स्पष्ट रूप से लिखा हुआ होना अति आवश्यक है।

अधिसूचना

सरकार के राजपत्र में प्रकाशित की जाने वाली सूचना अधिसूचना कहलाती है। अधिसूचनाएँ किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित भी हो सकती है, किन्तु इनका संबंध सामान्य जनता से होता है। इसलिए इन्हें राजकीय राजपत्र में निश्चित रूप से प्रकाशित किया जाता है और आवश्यकता होने पर समाचार पत्रों में भी प्रकाशित किया जाता है। अधिसूचना किसी अधिनियम के अंतर्गत जारी की जाती है तथा यह अन्य पुरुष शैली में लिखी जाती है।

राजपत्रों में अधिसूचना का प्रयोग सामान्यतः निम्न प्रयोजनों के लिए किया जाता है:

- नियमों, अधिनियमों, आदेशों, नीतियों और शक्तियों के लागू होने या उनमें संशोधन की सूचना प्रकाशित करने हेतु।
- अधिकारियों के कार्यभार एवं अधिकारों की सूचना प्रकाशित करने हेतु।
- उच्चाधिकारियों (राजपत्रित) की नियुक्ति, प्रतिनियुक्ति, स्थानांतरण, पदोन्नति, पदावनति, वेतनवृद्धि, सेवानिवृत्ति, अवकाश प्राप्ति आदि से संबंधित सूचनाएँ प्रकाशित करने हेतु।
- अधिसूचना में निम्न बातों का उल्लेख आवश्यक है:
- अधिसूचना में यह उल्लेख रहना आवश्यक है कि यह राजपत्र के किस भाग और किस खण्ड में प्रकाशित होनी है।
- अधिसूचना पर संयुक्त सचिव या उससे बड़े सक्षम अधिकारी के हस्ताक्षर होते हैं, क्योंकि अधिसूचना प्रकाशित कराने का अधिकार केवल इस स्तर के अधिकारियों को ही प्राप्त होता है।
- इसमें संबोधन तथा स्वनिर्देश नहीं होता।
- अधिसूचना जिस कार्यालय से प्रकाशित करवानी है उसका नाम तथा पता आवश्यक है।
- प्रतिलिपियाँ जिन्हें प्रेषित की जानी हैं उनके नाम पता नीचे बायीं ओर लिखे जाते हैं।
- अधिसूचनाएँ केवल किसी राज्य सरकार या केन्द्र सरकार के द्वारा ही जारी की जाती हैं।

परिपत्र

जब एक ही सूचना, आदेश, निर्देश या संदेश कई व्यक्तियों अथवा कार्यालयों को भेजना हो, ऐसी परिस्थिति में लिखा जाने वाला पत्र परिपत्र कहलाता है। परिपत्र में एक सरकारी पत्र के सभी लक्षण होते हैं, किंतु इसमें जिन्हें परिपत्र भेजा जा रहा है, उसके पद के नाम से पहले समस्त शब्द जोड़ दिया जाता है। परिपत्र की सभी प्रतियों पर अधिकारी के हस्ताक्षर नहीं होते, केवल कार्यालय प्रति पर ही हस्ताक्षर होते हैं।

परिपत्र लेखन के लिए आवश्यक बातें:

- परिपत्र संख्या पत्र के बीच में सबसे ऊपर लिखी जाती है।
- संबोधन हेतु महोदय / महोदया का प्रयोग किया जाता है।
- जिसे परिपत्र भेजा जाना है उसका पता न लिखकर बहुवचन में समस्त प्रेषितियों का पदनाम लिख दिया जाता है। यथा- सेवा में, समस्त चिकित्सा अधिकारी आदि।
- परिपत्र में स्वनिर्देश (भवदीय) आदि का प्रयोग नहीं होता, परंतु परिपत्र जारी करने वाले अधिकारी का नाम तथा पदनाम अवश्य लिखा जाता है।
- परिपत्र की भाषा शैली अन्य पुरुष में होती है।

निविदा सूचना

सरकारी अथवा गैर-सरकारी प्रतिष्ठानों द्वारा अपने निर्माण कार्य कराने, सामान की आपूर्ति करने, नीलामी आदि के लिए इन कार्यों को कर सकने वाले व्यक्तियों के सूचनार्थ समाचार पत्रों में जो आमंत्रण प्रकाशित किया जाता है, उसे निविदा सूचना कहते हैं। निविदा में शामिल होने वाले व्यक्ति का अनुज्ञाधारी (जिनके पास लाइसेंस हो) होना आवश्यक है।

निविदा सूचना में निम्न बातों का होना आवश्यक है:

- जिस कार्यालय के द्वारा निविदा सूचना जारी की गई है उसका नाम, पता व स्थान।
- पत्र क्रमांक व दिनांक का उल्लेख।
- जारी की गई निविदा की संख्या।
- निविदा खोलने की दिनांक व समय।
- वांछित कार्य (सामग्री) का स्पष्ट उल्लेख।
- कार्य पूर्ण करने की अवधि।
- अनुमानित व्यय राशि का उल्लेख।
- धरोहर राशि एवं उसे जमा कराने की प्रक्रिया का उल्लेख।
- निविदा प्रपत्र के मूल्य का उल्लेख।
- निविदा जारी करने वाले अधिकारी का पदनाम।

पृष्ठांकन

कार्यालयी पत्रों में पृष्ठांकन किया जाता है। जब किसी मूल पत्र को ही प्रेषक के पास वापस भेजा जा रहा हो अथवा उस पत्र को टिप्पणी के लिए किसी दूसरे मंत्रालय/अधीनस्थ कार्यालय में भेजा जा रहा हो तो उस पत्र पर कार्यालय द्वारा की गई कार्यवाही को पृष्ठांकन कहते हैं।

कार्यालय टिप्पणी

सरकारी कार्यालयों में प्राप्त पत्रों का निष्पादन करने हेतु उन पर कर्मचारियों या अधिकारियों द्वारा जो अभ्युक्तियाँ लिखी जाती हैं, उन्हें टिप्पणी कहा जाता है। टिप्पणी से पत्र की विषयवस्तु को समझने में और निर्णय पर पहुँचने में सहायता मिलती है। इसमें तथ्यों, पूर्व में की गई कार्यवाही एवं पृष्ठभूमि की जानकारी दी जाती है तथा संभावित विकल्पों पर विचार किया जाता है। टिप्पणी में संबद्ध नियमों, अधिनियमों का उल्लेख भी किया जाता है, जिससे अधिकारी को निर्णय तक पहुँचने में आसानी हो जाती है। टिप्पणी निरपेक्ष, निस्संग, विषय के गुणों एवं अवगुणों को ध्यान में रखते हुए विवेकपूर्ण ढंग से लिखी जाती है। इसके लेखन में लिपिक बायीं ओर लघु हस्ताक्षर करता है तथा अधिकारी दायीं ओर पूरे हस्ताक्षर करते हुए अपने पदनाम का भी उल्लेख करता है।

निष्कर्ष: हम कह सकते हैं कि कार्यालय में हिंदी के क्षेत्र में प्रगामी प्रगति हासिल करने के लिए उपरोक्त बातों को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार हिंदी में पारंगत बनकर कार्यालयीन काम काज में पेशेवर हिंदी दस्तावेजों को तैयार कर उनका सफल निपटान से प्रत्येक कार्यालय राजभाषा नीति एवं राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकता है।

पिंदु सिंह

परियोजना अधिकारी (राजभाषा)/मा.सं. बी.ई.एल. हैदराबाद



भारत की प्रतिष्ठित पौराणिक ग्रंथों का हिंदी रूप

ग्रंथ	प्रमुख हिंदी अनुवादक	समय (लगभग)	भाषा का स्वरूप
रामायण	गोस्वामी तुलसीदास	1574 ईस्वी	अवधी (हिंदी)
महाभारत	सबल सिंह चौहान	1670 ईस्वी	पुरानी हिंदी / ब्रज
महाभारत	गीता प्रेस / आधुनिक विद्वान	1900 के बाद	आधुनिक खड़ी बोली

हिंदी विज्ञान कथा जगत के सबसे प्रसिद्ध लेखकों - **पंडित अंबिका दत्त व्यास** को हिंदी की शुरुआती विज्ञान कथाओं में से एक, “**आश्चर्यवृत्तांत**” (1884-1888) लिखने का श्रेय दिया जाता है। इसमें भूमिगत सभ्यताओं और उन्नत तकनीक जैसे विषयों को दर्शाया गया था।

हिंदी में ‘पैलिड्रोम’ को **विलोमपद** या **उल्टा-पुल्टा** शब्द कहा जाता है। प्रसिद्ध वाक्य “ललिता बोली ताली ल” इसे पीछे से पढ़ने पर भी यही ध्वनि निकलती है। इसके अलावा नमन, कनक, सरस, जलज, और कडक आदि हिंदी के कुछ पैलिड्रोम प्रसिद्ध शब्द हैं।

बच्चों के लेख

हिंदी – एकता की भाषा

भूमिका

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ पर्वत, नदियाँ, समुद्र, वन, खेत, गाँव, नगर, रीति – रिवाज, धर्म, जाति और सभी भाषाएँ भिन्न-भिन्न हैं। इस विविधता के कारण ही भारत को विश्व में अनेकता में एकता का अद्भुत उदाहरण माना जाता है। भारत में सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक भाषा और लहजे बदल जाते हैं। फिर भी एक ऐसी भाषा का माध्यम है, और वह भाषा है, हिंदी। इसे केवल संवाद का माध्यम कहना उचित नहीं होगा, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, परंपरा और एकता का प्रतिक है।

हिंदी भाषा का इतिहास अत्यंत समृद्ध और गौरवपूर्ण है। इसका उद्भव संस्कृत से माना जाता है। संस्कृति से अपभ्रंश और प्राकृत भाषाओं के माध्यम से हिंदी ने अपनी अलग पहचान बनाई। भक्तिकाल में हिंदी ने अपनी अलग – अलग पहचान बनाई। भक्तिकाल में तुलसीदास, कबीर, सूरदास जैसे संत कवियों ने हिंदी को जन – जन की भाषा बना दिया। उन्होंने जटिल संस्कृति की बजाय सरल और सहज हिंदी में रचनाएँ की जिससे साधारण जनता भी साहित्य और आध्यात्मिक से जुड़ सकें। रीतिकाल और आधुनिक काल में भी हिंदी साहित्यकारों ने समाज को जागरूक किया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का नारा दिया। महात्मा गांधी ने हिंदी को “राष्ट्र की जननी” कहकर इसकी महत्ता को और बढ़ाया।

स्वतंत्रता संग्राम के समय हिंदी ने देश को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय अंग्रेजी शासक भारतीय भाषाओं को दबाने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन राष्ट्रभक्तों ने हिंदी को अपने संघर्ष का हथियार बनाया। हिंदी में लिखी गई कविताओं, नाटकों और लेखों ने लोगों में देशभक्ति और आजादी का संचार किया।

सुभद्राकुमारी चौहान की कविता झाँसी की रानी या रामप्रसाद बिस्मिल की पंक्तियाँ – ये सभी उदाहरण हैं कि किस प्रकार हिंदी ने स्वतंत्रता संग्राम को ऊर्जा दी। इसलिए हिंदी को “जन-जन की भाषा” कहा गया।

भारत के संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने यह निर्णय लिया कि देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी भारत की राजभाषा होगी। इसीलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। हालाँकि भारत में अन्य भाषाओं को भी मान्यता मिली है, फिर भी हिंदी का स्थान विशेष है क्योंकि यह सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। यह सरकारी कामकाज से लेकर साहित्य, मीडिया और शिक्षा तक हर क्षेत्र में प्रयुक्त होती है।

भारत जैसे विशाल और बहुभाषीय देश में संवाद और आपसी समझ की बड़ी चुनौती है। इस चुनौती को हिंदी ने सरल बना दिया।

- यदि कोई व्यक्ति उत्तर प्रदेश से तमिलनाडु जाता है, तो वहाँ स्थानीय भाषा अलग होती है। लेकिन हिंदी के माध्यम से वह संवाद कर सकता है।
- यदि असम का व्यक्ति गुजरात में व्यापार करना चाहता है तो वह हिंदी में अपनी बात कह सकता है।

इस प्रकार हिंदी एक सेतु का काम करती है। जो देश के विभिन्न हिस्सों को जोड़ती है। यही कारण है कि इसे एकता की भाषा कहा जाता है।

- हिंदी साहित्य ने भारतीय समाज को दिशा देने का काम किया है।
- भक्तिकाल में भक्ति और आध्यात्मिकता का संदेश दिया।
- रीतिकाल में श्रृंगार और शास्त्रीय काव्य को स्थान मिला।
- आधुनिक काल में समाज सुधार, राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता संग्राम के लिए जागरूकता फैलाने का कार्य हुआ।

आज भी हिंदी साहित्य देश के सांस्कृतिक जीवन का आधार है। मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ समाज की सच्चाई दिखाती हैं। वहीं महादेवी वर्मा की रचनाएँ भावनाओं की गहराई को छू लेती हैं। आज के तकनीकी युग में भी हिंदी अपनी पहचान बनाए हुए हैं।

- समाचार – पत्र, रेडियो, टेलीफोन और सोशल मीडिया पर हिंदी सबसे लोकप्रिय भाषा है।
- बॉलीवुड और भारतीय संगीत ने हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया है।
- इंटरनेट पर हिंदी सामग्री की माँग लगातार बढ़ रही। विश्वविद्यालयों और विदेशी संस्थानों में भी हिंदी का अध्ययन करवाया जाता है। यह दर्शाता है कि हिंदी केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्वभर में सम्मान प्राप्त कर रही है।

विश्व कि लगभग 50 से अधिक देशों में हिंदी भाषी लोग रहते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी हिंदी के प्रयोग की माँग की जा रही है। यह गर्व की बात है कि हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इससे स्पष्ट होता है कि हिंदी केवल राष्ट्रीय एकता की भाषा नहीं, बल्कि वैश्विक पहचान का माध्यम भी बन चुकी है।

निष्कर्ष: हिंदी केवल भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता की आत्मा है। इसने स्वतंत्रता संग्राम में देश को जोड़ा और आज भी यह विभिन्न भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य कर रही है।

हमें गर्व होना चाहिए कि हिंदी हमारी पहचान है। यदि हम सभी मिलकर हिंदी का आदर करेंगे, इसे बोलेंगे और अपनाएंगे, तो यह आने वाली पीढ़ियों के लिए भी हमारी एकता, संस्कृति और गौरव की धरोहर बनी रहेगी।

इसलिए सही ही कहा गया है – “हिंदी है हमारी शान, यही है भारत की पहचान।”

टिप्पण – हिंदी माह 2025 के दौरान बच्चों के लिए आयोजित हिंदी में निबंध लेखन प्रतियोगिता में उक्त निबंध को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जी जॉन विलियम

कक्षा-XI

माता का नाम – पी कविता निर्मला, उप अभियंता (ईडबल्यूएलएस-पीई-परीक्षण), बीईएल हैदराबाद



बी अबीगैल ग्रेस (कक्षा-VI)

माता का नाम: अक्सा के डी, प्रबंधक (वित्त), बीईएल हैदराबाद

उपलब्धियां

क्यूसीएफआई, सिकंदराबाद द्वारा बीईएल हैदराबाद को उत्कृष्ट योगदान के लिए और उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कार प्राप्त हुआ।



बीईएल, हैदराबाद के कर्मचारीगण पुरस्कार ग्रहण करते हुए।



राजभाषा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु श्री सुरेश कुमार वी, उप प्रबंधक(राजभाषा), स्ट. सं. 214555, को अखिल भारतीय बीईएल राजभाषा सम्मेलन 2025, हैदराबाद के दौरान दिनकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



हिंदी में उत्कृष्ट तकनीकी लेखन हेतु श्रीमती चेरकूरि फणि माधुरी, प्रबंधक (प्रचालन), स्ट. सं. 215287 को कारपोरेट स्तर पर नागार्जुन पुरस्कार (द्वितीय) से सम्मानित किया गया।

कर्मचारी के शिशुओं को हिंदी विषय में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु मैथिलीशरण शैक्षणिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

• अरविंद जी., उ.म.प्र., स्टाफ सं. 211113 जी की पुत्री आरती जी को 12वीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु मैथिलीशरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



• उपेंद्र जी., व.स.अ, स्टाफ सं. 213823 जी के पुत्र मास्टर गंजी सामंयू को 10वीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु मैथिलीशरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



• भीम बहादुर सुनार, व.स.अ, स्टाफ सं. 213071 जी की पुत्री सुश्री ज्ञानेश्वरी सुनार को 10वीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु मैथिलीशरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



पदोन्नतियां



सेवानिवृत्तियां

बीईएल निदेशक (अन्य यूनिट), श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव के सेवानिवृत्ति समारोह।



बीईएल हैदराबाद के महाप्रबंधक व यूनिट प्रमुख (ईडब्ल्यूएनएस) श्री के श्रीनिवास और महाप्रबंधक ईडब्ल्यूएलएस डॉ सीएच विश्वनादम श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव, बीईएल के निदेशक (अन्य यूनिट) को स्मृति चिन्ह देते हुए।





श्री सौंदर राज सी. एस, कनिष्ठ अनुभाग अधिकारी प्रचालन-योजना, स्टाफ सं. 206432, दिनांक 30.04.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



श्री राजा पांडियन एम., क.प., (सुरक्षा), स्टाफ सं. 211472, दिनांक 30.04.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



श्री नागेश्वर राव नायक देसवत, वरिष्ठ अभियंता ग्र.स.-नौसेना, स्टाफ सं. 290158, दिनांक 31.05.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



श्रीमती नागजनेयम्मा एसवीएल, सहायक अभियंता-II प्रचालन-सा.प्र.सा.नि. एवं भ, स्टाफ सं. 207686, दिनांक 31.05.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



श्रीमती विजयलक्ष्मी वी, सहायक अभियंता-II प्रचालन-संयोजन, स्टाफ सं. 206674, दिनांक 31.05.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



श्री श्रीधर जे, उप महाप्रबंधक ईडब्ल्यूएलएस-वि. एवं अ.-आईईडब्ल्यू, स्टाफ सं. 207688, दिनांक 30.06.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



श्रीमती निर्मला डी, कनिष्ठ अनुभाग अधिकारी प्रचालन, स्टाफ सं. 209083, दिनांक 31.07.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



श्रीमती श्री लक्ष्मी जी, उप प्रबंधक प्रचालन-सा.प्र.-क्रय, स्टाफ सं. 208517, दिनांक 31.07.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



श्रीमती जयश्री के, प्रबंधक नौसेना - डीएनई, स्टाफ सं. 207691, दिनांक 31.07.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



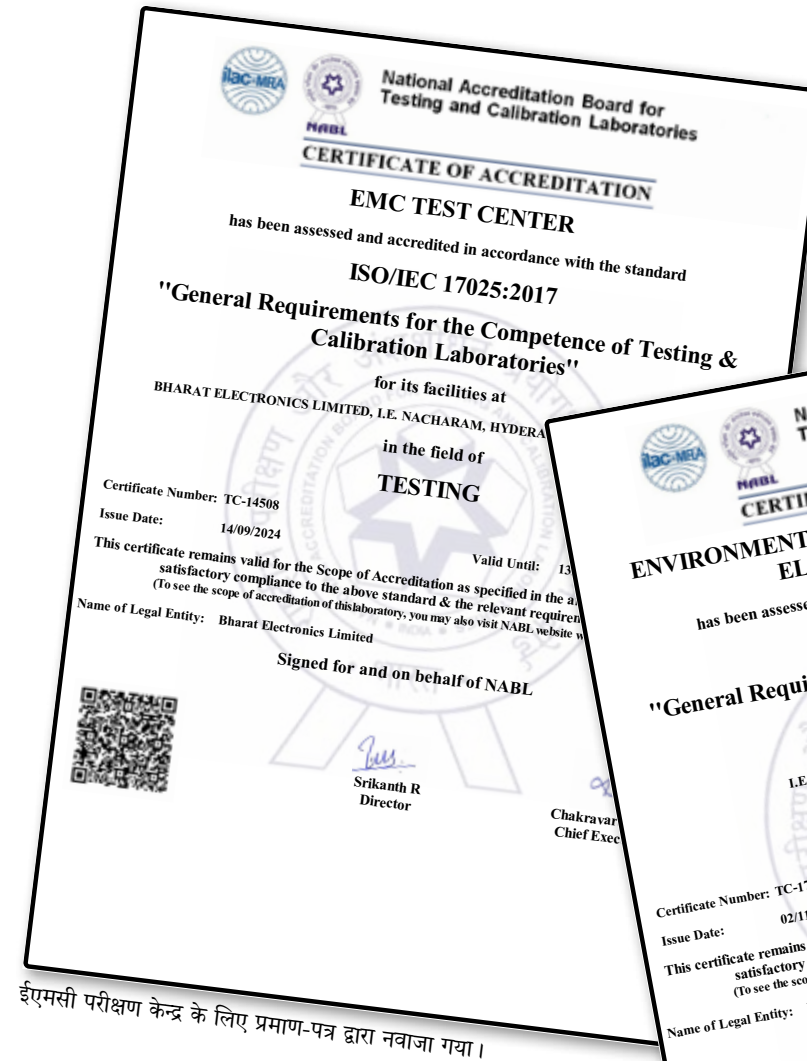
श्री विश्वनाथ रेड्डी के, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक ईडब्ल्यूएलएस - पी एंड एस स्टाफ सं. 207411, दिनांक 31.08.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



श्री जॉय तट्टिल पौलोस, मुख्य सुरक्षा अधिकारी मा.स.-सुरक्षा, स्टाफ सं. 210823, दिनांक 31.05.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



श्री लॉटू राम, वरिष्ठ अभियंता ग्र.स.-नौसेना, स्टाफ सं. 290162, दिनांक 31.07.2025 को सेवानिवृत्ति हुए।



ईएमसी परीक्षण केन्द्र के लिए प्रमाण-पत्र द्वारा नवाजा गया।



पर्यावरण परीक्षण केन्द्र के लिए प्रमाण-पत्र द्वारा नवाजा गया।



भास्कर सीएसयू
अपर महाप्रबंधक (ईडब्ल्यूएलएस)



శ్రీమతి యాదా శ్రీమతి యాదా
 (స్రీమతి యాదా యాదా
 చిన్న పనిలో యాదా
 ప్రభుత్వ సేవలో యాదా
 మహిళా విభాగంలో యాదా
 ఎలా ఎలా పనిచేస్తుంది)

కానీ యాదా శ్రీమతి యాదా
 చిన్న పనిలో యాదా
 సేవ సేవలో యాదా
 ప్రభుత్వ సేవలో యాదా
 మహిళా విభాగంలో యాదా
 ఎలా ఎలా పనిచేస్తుంది

మరియు యాదా యాదా
 చిన్న పనిలో యాదా
 సేవ సేవలో యాదా
 ప్రభుత్వ సేవలో యాదా
 మహిళా విభాగంలో యాదా
 ఎలా ఎలా పనిచేస్తుంది

నీటి మహిళ

కానీ యాదా శ్రీమతి యాదా
 (స్రీమతి యాదా యాదా
 చిన్న పనిలో యాదా
 ప్రభుత్వ సేవలో యాదా
 మహిళా విభాగంలో యాదా
 ఎలా ఎలా పనిచేస్తుంది

కానీ యాదా శ్రీమతి యాదా
 చిన్న పనిలో యాదా
 సేవ సేవలో యాదా
 ప్రభుత్వ సేవలో యాదా
 మహిళా విభాగంలో యాదా
 ఎలా ఎలా పనిచేస్తుంది

సత్యనారాయణ సురా
 ఉప అభివృద్ధి (సం. ఎం. సె.)
 బీజేఎల్ హైదరాబాద్



టిప్పణ - యూనిట్ కే కర్మచారి ద్వారా తెలుగు లో రచిత యాదా కవిత్వా ఆధునిక యుగ లో మహిళా శక్తికీరణ విషయ పర కేంద్రిత యే.

వివిధ

ఆపరేషన్ సిందూర్

మహాప్రబంధక వ యూనిట్ ప్రముఖ (ఐడబ్ల్యూఎన్ఎస్) శ్రీ కే శ్రీనివాస్ మరియు మహాప్రబంధక ఐడబ్ల్యూఎల్ఎస్ డాక్ టీఎచ్ విశ్వనాథం ద్వారా ఆపరేషన్ సిందూర్ లో బీజేఎల్ హైదరాబాద్ కే కర్మచారియో ద్వారా దిద్దా దిద్దా యోగదాన కే దిద్దా సమ్మానిత కిద్దా దిద్దా.

ఆపరేషన్ సిందూర్ లో యోగదాన కే దిద్దా సమ్మానిత కర్మచారియో మరియు మహాప్రబంధక వ యూనిట్ ప్రముఖ (ఐడబ్ల్యూఎన్ఎస్) శ్రీ కే శ్రీనివాస్ మరియు మహాప్రబంధక ఐడబ్ల్యూఎల్ఎస్ డాక్ టీఎచ్ విశ్వనాథం కే సాథి యుప్ ఫొటో.



పహేలీ

1. మే రక్షా కా సాథి యే, తకనీకీ
 ఆగె రహతా యే, రడార్, సంచార
 మేరా కామ, బతాఱో మే కౌన్ యే?
 ఉత్తర - బీజేఎల్.
2. నా మే సేనిక, నా మే బండ్క,
 పర యుద్ధ మే దేతా యే సుఖద రూప్.
 దుష్మన్ కౌ పహలే పహచాన్ లౌ,
 ఆసమాన్ మే నజరే తాన్ లౌ.
 ఉత్తర - రడార్ ప్రణాళి.
3. బినా ఆవాజ్ కే బాత్ కరాకౌ,
 దూర్-దూర్ తక్ సందేశ్ పహుచాకౌ.
 సేనా కీ మే యే పహచాన్,
 బతాఱో క్యా యే మేరా నామ్?
 ఉత్తర - సంచార ప్రణాళి
4. ఱొఖ్ యే, నా కౌఱీ ఛేహరా,
 ఫిర్ బీ దేఖు యే ఱాక్ పహరా.
 దుష్మన్ కీ ఱర చాల్ పక్డౌ,
 రక్షా మే ఆగె బడౌ.
 ఉత్తర - నిగరానీ ప్రణాళి





पाठकों के विचार

21 फरवरी 2025 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर कर्मचारियों द्वारा अपनी मातृभाषा में प्रस्तुत रोचक प्रकाशन सामग्री को शामिल करते हुए बीईएल हैदराबाद यूनिट में इस विषय पर है-वेज गृह पत्रिका का हिंदी में एक विशेषांक प्रकाशित किया गया जिसको पढ़ने के बाद पाठकों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।



दिनांक 31 जुलाई 2026

डॉ. राजनारायण अवस्थी
(पूर्व) सदस्य- सचिव
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम)
हैदराबाद

गद्यद्वय,

है-वेक्स का 'अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक का मुखपृष्ठ राष्ट्र के प्रौद्योगिकी विकास में भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) का अग्रिम योगदान दर्शा रहा है। सुश्री वारुणि डी. कृ. आर्खेख 'तेलुगु भाषा', सुश्री सुजाता नागलक्ष्मी नागयणन का आर्खेख 'तमिल भाषा' तथा सुश्री के.एम. सुनीता कुमारी का आर्खेख 'हिंदी लेखक नागार्जुन' अत्यंत प्रशंसनीय हैं। इस विशेषांक में प्रकाशित अन्य रचनाकारों ने भी कलात्मक रचनाधर्मिता एवं अग्रिम रचनात्मक कौशल का परिचय दिया है।

इस विशेषांक में प्रकाशित श्री बी. सुरेशकुमार का आर्खेख 'भारत की शास्त्रीय भाषाएँ' संग्रहीत है। लेखक ने जिस प्रकार ऐतिहासिक भाषाविज्ञान की दृष्टि से भारत की अत्यंत सम्मानित शास्त्रीय भाषाओं का विश्लेषण किया है यह उनके गहन अध्ययन का परिचायक है। उन्होंने आदर्शः सत्य बिखा है कि 'भारत की शास्त्रीय भाषाएं संसार की सिर्फ माध्यम ही नहीं हैं, वे भारत की ऐतिहासिक, दार्शनिक और साहित्यिक परंपराओं की वाहक हैं।' इसी प्रकार श्री फिट्टु सिंह ने भी गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सशक्त लेखनी चलाई है। पूर्ण विश्वास है कि अगले विशेषांक में अनेक नवीन विषय पर पढ़ने की मिलेगी। सुश्री चेतकरी फणि माधुरी का आर्खेख 'भारतीय भाषाओं में कुछ महत्वपूर्ण महिला रचनाकार' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। विशेषांक का संपादन कौशल किसी भी पत्रिका के संपादक के लिए अनुकरणीय है। उस संपादन कौशल में संपादन समिति, विशेष रूप से राजभाषा अनुभाग का पोषण स्पष्ट रूप से झलक रहा है। आशा है कि पत्रिका का अगला विशेषांक पुनः किसी एक नए विषय के अरातल पर प्रकाशित होगा।

शुभकामनाओं सहित,

31/07/2026

(डॉ. राजनारायण अवस्थी)

सेवा में,

श्री बी. सुरेश कुमार
उप प्रबंधक (राजभाषा)
भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, हैदराबाद

डॉ. राजनारायण अवस्थी
प्रबंधक (राजभाषा), ईसीआईएल
एवं सदस्य सचिव, नराकास
(उपक्रम), हैदराबाद



“

यह विशेषांक अत्यंत प्रभावी, विचारोत्तेजक और संवेदनशील प्रयास का परिणाम है। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के संदर्भ में भारतीय भाषाओं की लिपियों, इतिहास और साहित्यिक परंपराओं को शामिल करना इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। सरकार द्वारा भारतीय भाषाओं और संस्कृति के संरक्षण हेतु किए जा रहे प्रयासों का समुचित विवरण इसे और भी उपयोगी बनाता है। ऐसी पत्रिकाएं हमें अपनी भाषायी जड़ों से जोड़ती हैं और भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती हैं।

”

डॉ. बी बालाजी
प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम
संचार), मिथानि, हैदराबाद



“ हमारी हैदराबाद यूनिट द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका का नया अंक पढ़ा। आमुख व रंग सज्जा मनभावन, संदेश प्रेरक, गद्य और पद्य का संतुलित संगम। संपादक ने हमारी पहचान, हमारी मातृभाषाओं के साथ हमारी पहचान का जो तादात्म्य स्थापित किया है, अदभुत है। लेखों की विवेचना स्तुति योग्य है। इसी तरह, कविताओं में सौंदर्य बोध का बखूबी वर्णन किया है। कुल मिलाकर सर्वांग सुंदर और संग्रहणीय अंक। पूरी संपादकीय टीम बधाई की पात्र है। ”



श्री श्रीनिवास राव
उप प्रबंधक (राजभाषा),
बीईएल कारपोरेट
कार्यालय, बेंगलूरु

“ अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर जारी विशेष संस्करण अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध है। विभिन्न सरकारी कर्मचारियों द्वारा अपनी-अपनी मातृभाषाओं में प्रस्तुत की गई रचनाएं भारत की भाषाई एकता में विविधता का सुंदर उदाहरण हैं। प्रत्येक भाषा की लिपि और संक्षिप्त इतिहास को सरल ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास विशेष रूप से सराहनीय है। इस प्रकार की पत्रिकाएँ हमारे राष्ट्र की भाषायी विरासत को संरक्षित और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ”



श्री श्यामलाल दास
सहायक प्रबंधक
(राजभाषा), बीईएल,
चेन्नई

“ पत्रिका का विषय-वस्तु चयन बहुत उत्कृष्ट और समयानुकूल है। मातृभाषा दिवस के अवसर पर भारतीय भाषाओं की समृद्ध परंपरा, लिपि और साहित्यिक धरोहर को एक साथ प्रस्तुत करना वास्तव में अनुकरणीय प्रयास है। सरकारी स्तर पर भारतीय भाषाओं के संवर्धन हेतु चल रही पहलों की जानकारी भी पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी है। यह पत्रिका भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय एकता के बीच सुंदर संबंध स्थापित करती है। ”



श्री सुनील कुमार
वरिष्ठ उप महाप्रबंधक
(गुणता प्रबंधन),
बीईएल, हैदराबाद

“ इस पत्रिका ने भारतीय भाषाई विविधता को अत्यंत सुरुचिपूर्ण और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। विभिन्न भाषाओं के साहित्यिक अंशों का समावेश यह दर्शाता है कि हमारी मातृभाषाएँ केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा हैं। प्रत्येक भाषा की लिपि और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को संक्षिप्त रूप में समझाना एक सराहनीय शैक्षिक पहल है। ऐसे प्रकाशन कर्मचारियों और पाठकों दोनों को अपनी भाषायी विरासत से जोड़ने का कार्य करते हैं। ”



श्री नीलू कुमार सिंह
उप महाप्रबंधक
(नौसेना - वि. एवं अ.),
बीईएल, हैदराबाद

अप्रैल – सितंबर 2025

छमाही के दौरान यूनिट में जारी परिपत्र

दिनांक	परिपत्र संख्या	विषय
09/04/2025	986	वित्त वर्ष 2025-26 के लिए अनुलब्धि और आश्रितता स्थिति का अनिवार्य अद्यतन।
10/04/2025	987	सार्वजनिक क्षेत्र दिवस समारोह का आयोजन (10-16 अप्रैल, 2025).
12/04/2025	988	यूनिट परिसर में वैयक्तिक मोबाइल फोन का उपयोग पर परामर्शिका।
18/04/2025	989	आरओपी 2025-26 के संबंध में महाप्रबंधकों द्वारा संबोधन।
24/04/2025	990	हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन योजनाएं।
29/04/2025	991	नई वर्दी पहनने के संबंध में।
28/05/2025	992	ऑपरेशन सिंदूर में दिए गए योगदान को मान्यता देते हुए विशेष भोज का आयोजन।
05/06/2025	993	विश्व पर्यावरण दिवस समारोह, 2025।
17/06/2025	994	रक्तदान शिविर का आयोजन।
19/06/2025	995	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह।
20/06/2025	996	21. 06. 2025 को कार्य दिवस घोषित।
15/07/2025	997	पार्किंग क्षेत्र में अनुरक्षण कार्य।
16/07/2025	999	स्थायी भत्ता के दरों में संशोधन के संबंध में।
17/07/2025	998	मातृत्व अवकाश के बाद काम पर लौटने वाली महिला कर्मचारियों के लिए नर्सिंग अवकाश।
12/08/2025	1000	स्वतंत्रता दिवस समारोह।
25/08/2025	1001	यूनिट सुरक्षा समिति का पुनर्गठन।
26/08/2025	1002	हिंदी माह समारोह / हिंदी दिवस।
19/09/2025	1003	20. 09. 2025 को कार्य दिवस घोषित करना।
22/09/2025	1004	विशेष अभियान 5.0 के अंतर्गत स्वच्छता पहल पर कार्यन्वयन।
24/09/2025	1005	कंपनी परिवहन का उपयोग करने वाले कर्मचारियों के लिए वर्ष 2024-25 से लागु करते हुए परिवहन वसूली की दरें।
25/09/2025	1006	हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह।
30/09/2025	1007	आयुध पूजा समारोह।



हिंदी माह समारोह 2025 – पुरस्कार विजेताओं का मुख्य अतिथि कप्तान डी.आर. प्रसाद, प्रभारी अधिकारी, एनटीजी, हैदराबाद एवं श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडबल्यूएनएस) व यूनिट प्रमुख के साथ ग्रुप फोटो।